शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321&9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

o"k 20] vid 02] uoEcj 2020

eY ; %
15 #i ; s

हिन्दी वालों की हिन्दी वालों से हिन्दी के लिए लड़ाई

तृतीय काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. दिए गए विषय पर आपको अपनी एच रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचना वाचन में अधिकतम पांच मिनट की हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता तथा एक सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. द्वितीय चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता तथा दो सौ रुपये की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. तृतीय चरण में पहुंचने वाले प्रतिभागियों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। प्रथम स्थान पाने वाले प्रतिभागी को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र तथा शेष 08 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। तृतीय चरण के समस्त प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता तथा तीन सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkbZ,u 0553875

विषय : पर्यावरण एवं प्रकृति

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नंः
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

कल, आज और कल भी बहुपयोगी
विश्व स्नेह समाज
मासिक, वर्ष:20, अंक: 02
नवम्बर : 2020

हिन्दी वालों की हिन्दी वालों से हिन्दी के लिए लड़ाई :… ……5

मातृभाषा–समर्थक जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी--------10

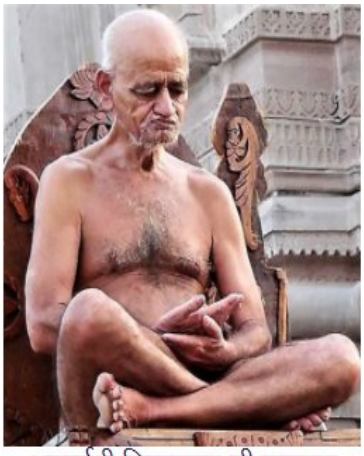

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

इस अंक में……

LFkk;h LrEHk

अपनी बातः दाम्पत्य में जहर घोलता अहम् 04
ये आग कब बुझेगी : आज का मुद्दा 13
धारावाहिक उपन्यासः मुगल–ए–आजम की विरासत................. 14
इतनी अच्छी पोस्ट जरूर पढियेगा. 26
`dfork,@xhr@xty% शबनम शर्मा, डॉ0 हितेष कुमार शर्मा, डॉ० अरुण कुमार आनन्द, डॉ.संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी, डॉ० पूनम माटिया, डॉ० राम सहाय बरैया 16–17
dgkuh% युक्ति, छुटकी रेत का महल 18, 24
प्रेरक प्रसंग 20
साहित्य समाचार, ...20,29, 30
y?k dFkk,% श्री रोहित यादव, शबनम शर्मा, श्री सीताराम गुप्ता 21–23
LokLF;% स्वास्थ्य सूत्र 31
leh{kk : बाबरा मन...... 32

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
lj{kd lnL;
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
foKkiu izcU/kd
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

C;wjks
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 dkO% 09335155949
b&esy%vsnehsamaj@rediffmail.com

lHkh in voSrfud gS
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

ukV%पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

दाम्पत्य में जहर घोलता अहम्

जब वैवाहिक जीवन की शुरुआत होती है उस समय पति-पत्नी एक दूसरे के हाव भाव से अनभिज्ञ रहते हैं. ऐसे में छोटी-छोटी बातों को लेकर अक्सर आपस में तू-तू मैं-मैं हो जाती है और धीरे-धीरे एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या की भावना व्याप्त हो जाती है. कई बार शादी के बाद बरसों गुजर जाते है लेकिन संबंधो की स्थिति दुखद ही बनी रहती है और पति-पत्नी के बीच रहकर भी अच्छी भावनाएं पैदा नहीं हो पाती. तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश में जीवन के हर क्षेत्र में स्थापित मूल्यों के मायने और अर्थ बदल रहे है. पहले महिलाएं घर की चाहरदीवारी से बाहर नहीं निकलती थी, घर की चाहरदीवारी ही उनका समूचा संसार था लेकिन बदलते परिवेश और आर्थिक बोझ के कारण परम्परागत संरचना में परिवर्तन हुआ है. महिलाएं अब घर की चाहरदीवारी से बाहर भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर शिक्षा, राजनीति, उद्योग तथा अन्य क्षेत्रों में प्रगति कर रही है. ऐसी स्थिति में पुरुषों को भी अपने निहित पूर्वाग्रह त्यागने होंगे. जब पत्नी हर क्षेत्र में पति को सहयोग दे रही है तो घरेलू कार्यो को हेय दृष्टि से देखकर उन्हें सिर्फ पत्नी द्वारा किए जाने योग्य क्यों माना जाए? इस मुद्दे को अहम या प्रतिष्ठा का प्रश्न क्यों न बनाया जाए? हमारे सामाजिक जीवन शैली में अभी भी घर के अंदर के सभी कार्यो के लिए पत्नी को जबाब देह माना जाता है और बाहरी कार्यो के लिए पुरुष को. यदि कोई पुरुष या महिला एक दूसरे कार्यो में सेहयोग करे तो उसमें बुराई क्या है?

एक ओर जहां स्त्री के लिए यत्र नार्यस्त पूज्यते...जैसी बातें कही जाती है, वहीं दूसरी ओर पति को पत्नी के लिए परमेश्वर के समकक्ष बताया गया है. यदि इन दोनों स्वरुपों के यथार्थ को समझा जाए तो पति-पत्नी के मध्य अहम अथवा अविश्वास का प्रश्न ही नहीं आएगा, परन्तु आजकल स्थिति बहुत प्रतिकूल हो चली है. पति और पत्नी के व्यक्तिगत असंतुलित अहम और विकृत जीवन मूल्य समुचे दाम्पत्य संबंधो पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है.

वैवाहिक जीवन को माधुर्य खोखले दंभ की भेंट चढ़ चुका है. पत्नियां आज अपने अधिकारों की चेतना से तो सराबोर हैं किन्तु दाम्पत्तय जीवन को सुदृढ़ता के लिए अपने प्राथमिक कर्तव्यों के निर्वाहन से कतरा जाना चाहती है. इसी प्रकार पति-पत्नी से अपेक्षाएं तो बड़ी-बड़ी करते है लेकिन अपने व्यक्तित्व की प्रस्तुति उस अंदाज में नहीं करते जो वैवाहिक जीवन में एक संयोगपूर्ण श्रृंखला को शुरुआत कर सके. वस्तुतः इन विसंगतियों की पृष्ठभूमि में असंतुलित अहम की बड़ी भूमिका है.

पति-पत्नी को एक दूसरे के नजदीक लाने का सबसे बढ़िया रास्ता है, आपसी बातचीत. आपको जो कोई परेशानी हो, उससे अपने जीवन साथी से निःसंकोच कह डालिए. इसका कोई औचित्य नहीं है कि आज आप किसी बात पर नाराज है और चार पांच दिन तक गुस्से में उबलने के बाद फिर अपने गुस्से को निकाले. अपने जीवन-साथी को किसी भी बात या आदत से अगर आप सहमत नहीं है तो उसके बारे में स्पष्ट रूप से उसे अवश्य कह दीजिए. अगर यह समस्या खासतौर पर सेक्स संबंधित है तो ईमानदारी से उसके बारे में बातचीत अवश्य कीजिए, क्योंकि अगर आप ईमानदारी से इस बारे में पहल नहीं करते है तो समस्या और भी जटिल हो सकती है.

अहम की भावना वैवाहिक संबंधी को दीमक की तरह खोखला कर देती है. सुखी दाम्पत्य जीवन का मूल आधार है परस्पर विश्वास और निःस्वार्थ प्रेम. दाम्पत्य जीवन की सस्याओं को आपसी सामजस्य और सहयोग से हल किया जा सकता है.

हिन्दी वालों की हिन्दी वालों से हिन्दी के लिए लड़ाई

असफल होने पर विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्याएं अब आम हो चुकी है. यूपीपीएससी में जहाँ पहले अंग्रेजी माध्यम से परीक्षा देने वाले दस से पंद्रह प्रतिशत प्रतिभागी सफल होते थे वहां नियमों में परिवर्तन कर देने से चयनित अभ्यर्थियों में अंग्रेजी माध्यम वालों की संख्या दो तिहाई हो गई. ग्रामीण परिवेश के हिन्दी माध्यम वाले अभ्यर्थी औंधे मुंह गिर पड़े. कभी आईएएस-पीसीएस का हब कहे जाने वाले इलाहाबाद से अब इन सेवाओ में सफल होने वाले अभ्यर्थियों की संख्या नगण्य होती है.

-डा. अमरनाथ

'पूजनीय बड़े पिता जी और माता जी, आप लोग मुझे माफ कर देना. मैं आपका अच्छा बेटा नहीं बन पाया... मैं जा रहा हूं. मैं जिन्दगी से परेशान हो गया हूँ. आप लोग मुझे माफ करना.' राजीव के सुसाइट नोट का यह एक अंश है. 11 सितंबर 2020 को यूपी पीसीएस का रिजल्ट आया. मेधावी छात्र राजीव पटेल को इस बार पूरी उम्मीद थी किन्तु चयन नहीं हुआ. वह दिन भर परेशान था और 12 की रात को उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली.

कहा जा सकता है कि असफल होने पर विद्यार्थियों द्वारा इस तरह की आत्महत्याएं अब आम हो चुकी हैं. किन्तु राजीव की आत्महत्या इससे अलग थी. वह प्रतिभाशाली भी था और परिश्रमी भी. उसकी आत्महत्या के पीछे का कारण यह था कि उसने हिन्दी माध्यम से परीक्षा दी थी और आयोग द्वारा परीक्षा प्रणाली में किए गए बदलाव के कारण हिन्दी माध्यम इस वर्ष यूपीपीएससी के परीक्षार्थियों पर आफत का पहाड़ बनकर टूट पड़ा.

यूपीपीएससी में जहाँ पहले अंग्रेजी माध्यम से परीक्षा देने वाले दस से पंद्रह प्रतिशत प्रतिभागी सफल होते थे वहां इस वर्ष नियमों में ऐसा परिवर्तन कर दिया गया कि चयनित अभ्यर्थियों में अंग्रेजी माध्यम वालों की संख्या लगभग दो तिहाई हो गई. ग्रामीण परिवेश के हिन्दी माध्यम वाले अभ्यर्थी औंधे मुंह गिर पड़े. कभी आईएएस-पीसीएस का हब कहे जाने वाले इलाहाबाद से अब इन सेवाओ में सफल होने वाले अभ्यर्थियों की संख्या नगण्य होती है. हिन्दी माध्यम वालों को दिए जाने वाले प्रश्न-पत्र भी आमतौर पर अस्पष्ट तथा विवादों के घेरे में रहते हैं क्योंकि वे मूलतः अंग्रेजी में तैयार किए गए प्रश्नों के अनुवाद होते हैं.

राजीव की आत्महत्या के बाद से हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वाले अभ्यर्थी प्रयागराज की सड़कों पर हैं. वे अहिंसात्मक तरीके से धरना प्रदर्शन कर रहे हैं, कैंडिल मार्च और जुलूस निकाल रहे हैं. ताकि यूपीपीएससी के चेयरमैन के दिल में हिन्दी के प्रति थोड़ी हमदर्दी पैदा हो सके. किन्तु डेढ़ महीने से ज्यादा बीत जाने के बाद भी चेयरमैन महोदय पीड़ित छात्रों के दुख दर्द को सुनने के लिए समय नहीं निकाल सके. हाँ, उ.प्र.प्रतियोगी छात्र मंच के अध्यक्ष संदीप सिंह के अनुसार कोरोना काल में इकट्ठा होने के नाम पर आन्दोलन में शामिल छात्रों पर मुकदमा करके उनकी आवाज दबाने का प्रयास मुस्तैदी से किया जा रहा हैं. दरअसल आज अंग्रेजी का जो वर्चस्व कायम है उसके लिए रास्ता साफ किया कांग्रेस सरकार ने. वैश्वीकरण के बाद 1995 में होने वाले गैट समझौते से अंग्रेजी का तेजी से बढ़ता हुआ दबाव महसूस किया गया. यह उदारीकरण की स्वाभाविक परिणति थी. जब पश्चिम का माल आने लगा, पश्चिम की संस्कृति आने लगी तो पश्चिम की भाषा को भला कैसे रोका जा सकता था? इसके बाद 2005 में मनमोहन सिंह की सरकार द्वारा गठित ज्ञान आयोग ने जो संस्तुति की उससे अंग्रेजी के मार्ग का बचा खुचा अवरोध भी हट गया. ज्ञान आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने 40 लाख नए अंग्रेजी शिक्षकों को नियुक्त करने और तत्कालीन मौजूद शिक्षकों को अंग्रेजी में प्रशिक्षित करने की सलाह दे डाली. ऐसा तो गुलामी के दौर में मैकाले भी नहीं कर सका था.

इन्ही परिस्थितियों में भाजपा की राष्ट्रवादी सरकार, स्वदेशी का नारा देती हुई सत्ता में आई. इसने कांग्रेस

विहीन भारत का भी नारा दिया. इस सरकार से उम्मीद थी कि वह अंग्रेजी की आँधी को रोकेगी और भारतीय संस्कृति की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को सम्मानजनक स्थान बहाल करने के लिए प्रभावी कदम उठाएगी. किन्तु इस सरकार ने जो किया वह सबसे बढ़कर था. इसने शिक्षा को पूरी तरह व्यापारियों के हवाले कर दिया और पिछली सरकारों ने जहाँ एक विषय के रूप में अंग्रेजी पढ़ाने पर जोर दिया था, इस सरकार ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम ही बना दिया.

मुख्यमंत्री बनने के बाद योगी आदित्यनाथ जी ने 2017 में सबसे पहला काम यह किया कि प्रदेश के पांच हजार प्राथमिक विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम में बदल दिया. निजी क्षेत्र के विद्यालय तो अंग्रेजी माध्यम के होते ही हैं, जो बचे-खुचे सरकारी विद्यालय हैं उनको भी अंग्रेजी माध्यम में बदल देने के पीछे का तर्क मेरी समझ में आजतक नहीं आया. जनता ने इसकी मांग की हो, इसके लिए कोई आन्दोलन किया हो, ऐसा भी सुनने में नहीं आया था. इतना बड़ा निर्णय लेने के पहले योगी आदित्यनाथ जी ने विशेषज्ञों की समिति बनाकर उनसे कोई सुझाव लेना या पूर्व में गठित आयोगों की सिफारिशों को देखना भी जरूरी नहीं समझा. अखबारों से जो सूचनाएं मिलीं उनसे पता चला कि अभिभावकों की व्यापक मांग को ध्यान में रखते हुए योगी जी ने यह निर्णय लिया था.

मुझे मुंशी प्रेमचंद द्वारा कहा गया एक प्रसंग याद आ रहा है. उन्होंने एकबार जौनपुर के एक मुस्लिम परिवार के बच्चों को थोड़ी अंग्रेजी पढ़ लेने की सलाह दी थी तो उस परिवार के मुखिया ने अंग्रेजी को 'टर्र टर्र की भाषा' कहकर उसकी खिल्ली उड़ाई थी और कहा था कि फारसी पढ़कर उनके घर के तीन लोग मुंसिफ हैं और आराम से बैठे-बैठे फैसले सुनाते हैं, फिर वे टर्र टर्र की भाषा (अंग्रेजी के बहुत से शब्दों के साथ 'टर' जुड़ा है जैसे कलक्टर, बैरिस्टर, इंस्पेक्टर आदि) पढ़ने की जहमत क्यों उठाएं? मैंने बचपन में भोजपुरी की एक कहावत भी सुनी थी- 'पढ़ें फारसी बेचें तेल, यह देखों किस्मत का खेल.' यानी, उस जमाने में फारसी पढ़ने वाले को तेल बेचने की नौबत नहीं आ सकती थी. फारसी उन दिनों कचहरियों तथा सरकारी काम-काज की भाषा थी और उसका बहुत सम्मान था. यह सही है कि फारसी हमारे देश के किसी प्रान्त का भाषा नहीं थी किन्तु हुकूमत करने वालों की भाषा वही थी. उन दिनों जनतंत्र तो था नहीं. जनता के ऊपर फारसी लाद दी गई और पूरे छह सौ साल तक फारसी हमारे देश पर शासन करती रही. ठीक वही स्थिति आज अंग्रेजी की है. यद्यपि आज हम एक जनतंत्र में रह रहे हैं.

मैंने बचपन में भोजपुरी की एक कहावत सुनी थी-'पढ़ें फारसी बेचें तेल, यह देखों किस्मत का खेल.' फारसी उन दिनों कचहरियों तथा सरकारी काम-काज की भाषा थी और उसका बहुत सम्मान था.

आज यदि अभिभावक अंग्रेजी माध्यम की मांग कर भी रहे हैं तो उसका कारण स्पष्ट है. अंग्रेजी पढ़ने से नौकरियां मिलती हैं. जब चपरासी तक की नौकरियों में भी सरकार अंग्रेजी अनिवार्य करेगी तो अंग्रेजी की मांग बढ़ेगी ही. यह एक ऐसा मुल्क बन चुका है जहां का नागरिक चाहे देश की सभी भाषाओं में निष्णात हो किन्तु एक विदेशी भाषा अंग्रेजी न जानता हो तो उसे इस देश में कोई नौकरी नहीं मिल सकती और चाहे वह इस देश की कोई भी भाषा न जानता हो और सिर्फ एक विदेशी भाषा अंग्रेजी जानता हो तो उसे इस देश की छोटी से लेकर बड़ी तक सभी नौकरियाँ मिल जाएंगी. छोटे से छोटे पदों से लेकर यूपीएससी तक की सभी भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी का दबदबा है. वन सेवा, चिकित्सा सेवा, इंजीनियरिंग सेवा, रक्षा सेवा आदि में तो केवल अंग्रेजी में ही लिखने की अनिवार्यता है. पता चला है कि इस वर्ष यूपीएससी में 97 प्रतिशत अंग्रेजी माध्यम वाले अभ्यर्थी ही सफल हुए हैं. उच्चतम न्यायालय से लेकर देश के पच्चीस में से इक्कीस उच्च न्यायालयों में किसी भी भारतीय भाषा का प्रयोग नहीं होता है. यह ऐसा तथाकथित आजाद मुल्क है जहां के नागरिक को अपने बारे में मिले फैसले को समझने के लिए भी वकील के पास जाना पड़ता है और उसके लिए भी वकील को पैसे देने पड़ते हैं. मुकदमों के दौरान उसे पता ही नही चलता कि वकील और जज उसके बारे में क्या सवाल-जबाब कर रहे हैं. ऐसे माहौल में कोई अपने बच्चे को अंग्रेजी न पढ़ाने की भूल कैसे कर सकता है? दरअसल, अंग्रेजी इस देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है. सुदूर गांवों में दबी प्रतिभाओं, जिनमें ज्यादातर दलित और आदिवासी हैं, को मुख्य धारा में

शामिल होने से रोकने में अंग्रेजी सबसे बड़ा अवरोध बनकर खड़ी है. हाल ही में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'द इंग्लिश मीडियम मिथ' में संक्रान्त सानु ने प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद के आधार पर दुनिया के सबसे अमीर और सबसे गरीब, बीस-बीस देशों की सूची दी है. बीस सबसे अमीर देशों के नाम हैं, क्रमशः स्विट्जरलैंड, डेनमार्क, जापान, अमेरिका, स्वीडेन, जर्मनी, आस्ट्रिया, नीदरलैंड, फिनलैंड, बेल्जियम, फ्रांस, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, इटली, कनाडा, इजराइल, स्पेन, ग्रीस, पुर्तगाल और साउथ कोरिया. इन सभी देशों में उन देशों की जनभाषा ही सरकारी कामकाज की भी भाषा है और शिक्षा के माध्यम की भी.

इसके साथ ही उन्होंने दुनिया के सबसे गरीब बीस देशों की भी सूची दी है. इस सूची में शामिल हैं क्रमशः कांगो, इथियोपिया, बुरुंडी, सीरा लियोन, मालावी, निगेर, चाड, मोजाम्बीक, नेपाल, माली, बुरुकिना फैसो, रवान्डा, मेडागास्कर, कंबोडिया, तंजानिया, नाइजीरिया, अंगोला, लाओस, टोगो और उगान्डा. इनमें से सिर्फ एक देश नेपाल है जहां जनभाषा, शिक्षा के माध्यम की भाषा और सरकारी कामकाज की भाषा एक ही है नेपाली. बाकी उन्नीस देशों में राजकाज की भाषा और शिक्षा के माध्यम की भाषा भारत की तरह जनता की भाषा से भिन्न कोई न कोई विदेशी भाषा है. (द्रष्टव्य, द इंग्लिश मीडियम मिथ, पृष्ठ-12–13) इस उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है कि अंग्रेजी माध्यम हमारे देश के विकास में कितनी बड़ी बाधा है.

वास्तव में व्यक्ति चाहे जितनी भी भाषाएं सीख ले किन्तु वह सोचता अपनी भाषा में ही है. हमारे बच्चे दूसरे की भाषा में पढ़ते हैं फिर उसे अपनी भाषा में सोचने के लिए अनूदित करते हैं और लिखने के लिए फिर उन्हें दूसरे की भाषा में ट्रांसलेट करना पड़ता है. इस तरह हमारे बच्चों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा दूसरे की भाषा सीखने में चला जाता है. इसीलिए मौलिक चिन्तन नहीं हो पाता. मौलिक चिन्तन सिर्फ अपनी भाषा में ही हो सकता है. पराई भाषा में हम सिर्फ नकलची पैदा कर सकते हैं. अंग्रेजी माध्यम वाली शिक्षा सिर्फ नकलची पैदा कर रही है.

वास्तव में व्यक्ति चाहे जितनी भी भाषाएं सीख ले किन्तु वह सोचता अपनी भाषा में ही है. हमारे बच्चों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा दूसरे की भाषा सीखने में चला जाता है. अंग्रेजी माध्यम वाली शिक्षा सिर्फ नकलची पैदा कर रही है.

जब अंग्रेज नहीं आए थे और हम अपनी भाषा में शिक्षा ग्रहण करते थे तब हमने दुनिया को बुद्ध और महावीर दिए, वेद और उपनिषद दिए, दुनिया का सबसे पहला गणतंत्र दिए, चरक जैसे शरीर विज्ञानी और शूश्रुत जैसे शल्य-चिकित्सक दिए, पाणिनि जैसा वैयाकरण और आर्य भट्ट जैसे खगोलविज्ञानी दिए, पतंजलि जैसा योगाचार्य और कौटिल्य जैसा अर्थशास्त्री दिए. तानसेन जैसा संगीतज्ञ, तुलसीदास जैसा कवि और ताजमहल जैसी अजूबा इमारत दिए. हमारे देश में तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय थे जहां दुनिया भर के विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे. इस देश को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था जिसके आकर्षण में ही दुनिया भर के लुटेरे यहां आते रहे. प्रस्तावित नई शिक्षा नीति में भी भारत के अतीत का गौरव-गान किया गया है और विश्व गुरु बनने का सपना देखा गया है (द्रष्टव्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, पृष्ठ-4). किन्तु इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया है कि भारत की उक्त समस्त उपलब्धियाँ अपनी भाषाओं में अध्ययन का परिणाम थीं.

इसी तरह नई शिक्षा नीति में प्राचीन समृद्ध सभ्यताओं में भारत, मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन और ग्रीस तथा आधुनिक सभ्यताओं में संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, इजराइल, दक्षिण कोरिया और जापान को आदर्श के रूप में रेखांकित किया गया है (द्रष्टव्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, पृष्ठ 72). नीति निर्माताओं से पूछा जाना चाहिए कि क्या उपर्युक्त में से कोई भी देश पराई भाषा को अपने विद्यार्थियों की शिक्षा का माध्यम बनाया है? या राज काज का काम पराई भाषा में करता है?

हमारे प्रधानमंत्री जी ने जापान की तकनीक और कर्ज के बलपर जिस बुलेट ट्रेन की नींव रखी है उस जापान की कुल आबादी सिर्फ 12 करोड़ है. वह छोटे छोटे द्वीपों का समूह है. वहां का तीन चौथाई से अधिक भाग पहाड़ है और सिर्फ 13 प्रतिशत हिस्से में ही खेती हो सकती है. फिर भी वहां सिर्फ भौतिकी में 13 नोबेल पुरस्कार पाने वाले वैज्ञानिक हैं. ऐसा इसलिए है कि वहां शत प्रतिशत जनता अपनी भाषा 'जापानी' में ही शिक्षा ग्रहण करती है. इसी तरह जिस इजराइल के विकास

पर वे मुग्ध हैं उस इजराइल की कुल आबादी मात्र 83 लाख है और वहां 11 नोबेल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक हैं क्योंकि वहां भी उनकी अपनी भाषा 'हिब्रू' में शिक्षा दी जाती है.

हमारा पड़ोसी चीन उसी तरह का बहुभाषी विशाल देश है जिस तरह का भारत. किन्तु उसने भी अपनी एक भाषा चीनी (मंदारिन) को प्रतिष्ठित किया और उसे वहां पढ़ाई का माध्यम बनाया. चीनी बहुत कठिन भाषा है. चीनी लिपि दुनिया की संभवतरू सबसे कठिन लिपियों में से एक है. वह चित्र-लिपि से विकसित हुई है. आज चीन जिस ऊंचाई पर पहुंचा है उसका सबसे प्रमुख कारण यही है कि उसने अपने देश में शिक्षा का माध्यम और राजकाज की भाषा अपने देश की चीनी भाषा को बनाया.

जिस अमेरिका और इंग्लैंड की अंग्रेजी हमारे बच्चों पर लादी जा रही हैं उसी अमेरिका और इंग्लैण्ड में पढ़ाई के लिए दूसरे देश से जाने वाले हर सख्स को आइइएलटीएस (इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम) अथवा टाफेल (टेस्ट आफ इंग्लिश एज फारेन लैंग्वेज) जैसी परीक्षाएं पास करनी अनिवार्य हैं. दूसरी ओर, हमारे देश के अधिकाँश अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में बच्चों को अपने देश की राजभाषा हिन्दी या मातृभाषा बोलने पर दंडित किया जाता है और हमारी सरकारें कुछ नहीं बोलतीं. यह गुलामी नहीं तो क्या है? बेशक गोरों की नहीं, काले अंग्रेजों की गुलामी.

इससे ज्यादा आश्चर्य की बात क्या हो सकती है कि जिस राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है, हिन्दी-हितैषी सरकार की उस शिक्षा नीति में हिन्दी का कहीं जिक्र तक नहीं है. यदि यह शिक्षा नीति लागू हो गई तो हिन्दी सिर्फ जनता के बोलचाल, गीत-गवनई और मनोरंजन की भाषा बनकर रह जाएगी. आज जरूरत है सबके लिए समान, पूरी तरह मुफ्त और सबको अपनी मातृभाषाओं में गुणवत्ता युक्त शिक्षा की. संविधान का मूल संकल्प हमें 'अवसर की समानता' का अधिकार देता है. संविधान का अनुच्छेद 51ए भी देश के प्रत्येक नागरिक और बच्चों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाली समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार देता है.

नई शिक्षी नीति में विदेशी विश्वविद्यालयों को आमंत्रित किया गया है. यदि ऐसा हुआ तो ज्ञान, सत्ता और प्रतिष्ठित नौकरी चंद संपन्न लोगों के हाथ में सिमट कर रह जाएगी. ये विदेशी विश्वविद्यालय यहां शिक्षा का व्यापार करने और उससे अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए आएंगे. ऐसी दशा में शिक्षा इतनी मंहगीं हो जाएगी कि वह देश की बहुसंख्यक आबादी की पहुंच से बाहर हो जाएगी.

प्रश्न यह है कि आजादी की तीन चौथाई सदी बीत जाने के बाद भी सबको समान, मुफ्त और उनकी मातृभाषाओं में शिक्षा क्यों उपलब्ध नहीं कराई जा रही है? यदि सरकार चाहे तो यह सिर्फ चार-पांच वर्षों में संभव है. केन्द्रीय विद्यालयों जैसे विद्यालय देश के सभी हिस्सों में आवश्यकतानुसार क्यों नहीं बन सकते? नई शिक्षा नीति में भी शिक्षा के लिए जी.डी.पी. का छह प्रतिशत तय किया गया है. पहले की सरकारें भी शिक्षा के मद में लगभग इतना ही निर्धारित करती थीं किन्तु खर्च मात्र ढाई-तीन प्रतिशत ही करती थीं. शिक्षा का बजट कम से कम नौ से दस प्रतिशत तक होना चाहिए. आज देश का हर नागरिक अपनी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करता है. यदि सरकार खुद बेहतर और सस्ती शिक्षा उपलब्ध कराती है तो जनता उसके लिए कुछ अधिक टैक्स देकर भी बहुत अधिक लाभ में रहेगी क्योंकि शिक्षा के नाम पर निजी शिक्षण संस्थाओं की लूट से वह मुक्त हो जाएगी.

18 अगस्त 2015 को इलाहाबाद हाई कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला दिया था. इस फैसले में माननीय हाईकोर्ट ने आदेश दिया था कि राजकीय कोष से वेतन पाने वाले सभी नौकरशाहों, सरकारी कर्मचारियों, जन प्रतिनिधियों आदि के बच्चों कों सरकारी विद्यालयों में ही शिक्षा दी जाय. यदि ऐसा हो सके तो देश की शिक्षा व्यवस्था का काया कल्प होने में समय नहीं लगेगा. कल्पना करें कि जिस प्राथमिक विद्यालय में जिले के जिलाधिकारी का बच्चा पढ़ेगा उसमें क्या संसाधनों का अभाव रह पाएगा? किन्तु इलाहाबाद हाई कोर्ट का उक्त फैसला जहां देशभर में लागू होना चाहिए था, वहां अपने प्रदेश में ही उसे रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया. हमारे पड़ोस के देश

भूटान में राज-परिवार के बच्चे भी सरकारी विद्यालयों में ही पढ़ते हैं. वहां भी निजी विद्यालय हैं किन्तु जिन बच्चों का प्रवेश सरकारी विद्यालयों में नहीं हो पाता वे ही निजी विद्यालयों में प्रवेश लेते है. हमारे दूसरे पड़ोसी चीन से लौटकर आने वाले लोग बताते हैं कि वहां गाँव का सबसे सुन्दर भवन उस गाँव का विद्यालय होता है.

नई शिक्षी नीति में विदेशी विश्वविद्यालयों को आमंत्रित किया गया है और देश में आने के लिए उन्हें सरकारी विश्वविद्यालयों जितनी सुविधाएं देने की बात कही गई है. यदि ऐसा हुआ तो ज्ञान, सत्ता और प्रतिष्ठित नौकरी चंद संपन्न लोगों के हाथ में सिमट कर रह जाएगी. आखिर विदेशी विश्वविद्यालय हमारे देश में ज्ञान-दान करने तो आएंगे नहीं. वे यहां शिक्षा का व्यापार करने और उससे अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए आएंगे. ऐसी दशा में शिक्षा इतनी मंहगीं हो जाएगी कि वह देश की बहुसंख्यक आबादी की पहुंच से बाहर हो जाएगी. पश्चिमी देशों की तरह उच्च शिक्षा की अभिलाषा रखने वालों को शिक्षा के लिए कर्ज लेना होगा और उसके बाद जीवन का बड़ा हिस्सा उस कर्ज को चुकाने में गंवा देना पड़ेगा.

अंगेजी के महत्व को भला कैसे अस्वीकार किया जा सकता है? किन्तु हमें कितनी अंग्रेजी चाहिए? क्या हमारे दैनिक जीवन का अंग्रेजी में चलना हमारे और हमारे देश के हित में है? एक विषय के रूप में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा देना बुरा नहीं है, किन्तु बचपन में ही शिक्षा के माध्यम के रूप में बच्चों पर अंग्रेजी थोप देना और उनकी अपनी भाषाएं छीन लेना भीषण क्रूरता और अपराध है. इसके लिए भविष्य हमें कभी माफ नहीं करेगा.

जहाँ तक एक भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखने का सवाल है, यूनेस्को का सुझाव है कि, 'यह स्वतः सिद्ध है कि बच्चे के लिए शिक्षा का सबसे बढ़िया माध्यम उसकी मातृभाषा है.... शैक्षिक आधार पर वह मातृभाषा के माध्यम से एक अनजाने माध्यम की अपेक्षा तेजी से सीखता है.' (भाषानीति के बारे में अंतर्राष्ट्रीय खोज, जोगा सिंह विर्क, पृष्ठ-4) इतना ही नहीं ब्रिटिश कौंसिल भी, जिसका काम ही अंग्रेजी सिखाना है, ठीक इसी तरह का सुझाव देता है.

एक विषय के रूप में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा देना बुरा नहीं है, किन्तु बचपन में ही शिक्षा के माध्यम के रूप में बच्चों पर अंग्रेजी थोप देना और उनकी अपनी भाषाएं छीन लेना भीषण क्रूरता और अपराध है.

दरअसल स्वदेशी, स्वभाषा, भारतीयता, राष्ट्रवाद आदि अपने सिद्धांतों के विरुद्ध सरकार, हमारे बच्चों पर पराई भाषा अंग्रेजी इसलिए थोप रही है क्योंकि आज सरकार ही नहीं, किसी भी बड़े राजनीतिक दल के सामने मुख्य प्रश्न देश के विकास का नहीं है, संस्कृति का भी नहीं है. उनके सामने मुख्य प्रश्न कुर्सी का है और कुर्सी के लिए होने वाले चुनाव में खर्च, चंदा, कमीशन, रिश्वत आदि सबकुछ तो उद्योगपति ही देते हैं और इसमें सहयोग मिलता है ब्यूरोक्रेसी का. आज उद्योगपति ही नौकरशाहों की मिली-भगत से देश चला रहे हैं. सरकार अब उनकी दलाल की भूमिका में है. इसीलिए उद्योगपतियों और नौकरशाहों के हित को ध्यान में रखकर ही कायदे-कानून बन रहे हैं. 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में अंग्रेजी भाषियों की संख्या 0.02 प्रतिशत है. यानी, इस देश पर 0.02 प्रतिशत अंग्रेजी बोलने वाले लोग 99.08 प्रतिशत भारतीय भाषाएं बोलने वालों पर अंग्रेजी रूपी विलायती हथियार के बल पर शासन कर रहे हैं.

वैसे भी आज देश के बड़े औद्योगिक घरानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को निरक्षर लेबर की जरूरत नहीं है. उन्हें और थोड़ी अंग्रेजी जानने वाले 'स्किल्ड लेबर' चाहिए. उन्हें ऐसे लेबर चाहिए जो जरूरत होने पर कंप्यूटर पर भी हाथ फेर सकें. सुसंस्कृत मनुष्य अथवा मौलिक चिन्तन करने वाले विद्वान या वैज्ञानिक तैयार करना अब नेताओं को अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने जैसा लग रहा है. अकारण नहीं है कि आज बुद्धिजीवी ही सर्वाधिक निशाने पर हैं.

फिलहाल, अभी तो प्रयागराज में संघर्षरत अभ्यर्थियों को आपकी मदद की गुहार है.

(लेखक कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर और हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं)

मातृभाषा-समर्थक संत व जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी

भारतीय संस्कृति को नजरअंदाज कर विदेशी संस्कृति को तरफ दौड़ लगाई जा रही है. यह जानते हुए कि विदेशी संस्कृति अपनाकर जीवन का उद्धार नहीं किया जा सकता. विदेशी संस्कृति सम्मानपूर्वक जीने की सीख नहीं देती है, बल्कि भारतीय संस्कारों का पतन कराने में अहम भूमिका निभाती है.

साहित्य, संस्कृति एवं समाज का दर्पण होता है. अंग्रेजी के कारण सब नष्ट हो रहा है.

- निर्मल कुमार पटौदी

देश में ऐसे संतों, धर्माचार्यों, योगाचार्यों, आचार्यों, आध्यात्मिक गुरुओं, कथावाचकों आदि की कमी नहीं, जिनके देश में लाखों अनुयायी हैं. ये ज्यादातर भारतीय संस्कृति व ज्ञान के समर्थक भी हैं. इनमें से कुछ के पास अकूत संपत्ति व संसाधन भी हैं. सब जानते -समझते हैं कि अपनी भाषाओं के बिना अपने धर्म और संस्कृति को बचाना संभव नहीं. यह जानते हुए भी इनमें शायद ही कोई भारतीय भाषाओं के साथ खड़ा हुआ हो. यदि ये अपनी भाषाओं के लिए सक्रिय योगदान दें तो प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्म, धर्म-संस्कृति की रक्षा की जा सकती है. लेकिन एक संत हैं, कन्नड़ भाषी विद्वान, परम आदरणीय संत व जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, जो व्यक्ति के विकास के लिए मातृभाषा में शिक्षा को अति आवश्यक मानते हुए इसके लिए निरंतर प्रयासरत हैं.

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज भारत के इतिहास में जब भी संकट, विघ्न, बाधाएँ उत्पन्न हुई हैं, तब समय ने समाधान लिए किसी अवतार का अवतरण हुआ है. इसी परंपरा में विलक्षण संत हैं कन्नड़ भाषी, कवि, लेखक, प्रकाण्ड पण्डित, अध्यात्मवेत्ता, कठोर आत्म तपस्वी और परोपकारी विद्यासागर हमारे बीच में हैं. वे हैं तो दिगंबर मुनि, आचार्य, लेकिन जैन समाज ही नहीं अजैन समाज के लोग भी उनके प्रति अगाध श्रद्धाभाव रखते हैं. आपकी वाणी को सभी समुदाय के लोग पवित्र वचनों की तरह आत्मसात करते हैं. आपसे मिलने प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, शंकराचार्य और हर ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र की विभिन्न विचारधार की सुविज्ञ हस्तियाँ पहुँची हैं. नई शिक्षा नीति नीति समिति के अध्यक्ष, सुविख्यात वैज्ञानिक और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के पूर्व अध्यक्ष कस्तूरी रंगन जी भी नई शिक्षा नीति के संबंध में अनसे मार्गदर्शन लेने के लिए उनसे मिलने गए थे.

दिव्यमूर्ति विद्यासागर जी महाराज का कहना है कि भारतीय संस्कृति को नजरअंदाज कर विदेशी संस्कृति को तरफ दौड़ लगाई जा रही है. यह जानते हुए कि विदेशी संस्कृति अपनाकर जीवन का उद्धार नहीं किया जा सकता। विदेशी संस्कृति सम्मानपूर्वक जीने की सीख नहीं देती है, बल्कि भारतीय संस्कारों का पतन कराने में अहम भूमिका निभाती है. हम ज्ञान भविष्य में बढ़ाना चाहते हैं, परंतु अतीत की तरफ नहीं देखते. शिक्षा एक संकेत है, जिसके चारों कोणों को जानना आवश्यक है. आंखें हैं, परंतु फिर भी देख नहीं पा रहे हैं. शिक्षा सूत्रों को खोलने की ओर इंगित करती है. उन्हें देख नहीं रहे हैं. शिक्षक गाइड नहीं हो सकता. मूल्य की ओर बढ़ने की जरूरत है. सत्य यह कि शिक्षा का मूल उद्देश्य ही ज्ञात नहीं हो पा रहा है. संकेत दिशा सूचक है. इसे श्रुतज्ञान कहते हैं. मतिज्ञान के बिना श्रुतज्ञान की कोई अवधारणा नहीं है. हेय और उपादेय जाग्रत होता है श्रुतज्ञान के माध्यम से. विषय तीन होते हैं-कर्ता, कार्य और कर्म. शिक्षा में इन तीनों का समावेश जरूरी है. आज भी शिक्षा की सही दिशा का निर्धारण नहीं हो पा रहा है. आत्म कल्याणी और भारतीय संस्कृति के पोषक संत शिरोमणि विद्यासागर का पक्का विश्वास है कि स्वराज्य की दिशा और दशा को बदलना है, तो शिक्षा, भाषा, न्याय और सरकार ये चारों एक-दूसरे के पूरक हैं. इनमें वांछित सुधार किए बिना वांछित परिवर्तन नहीं हो सकेगा. चारों क्षेत्रों में स्वाधीनता के मूल्यों की आवश्यकता के अनुसार समग्र सुधार करना होगा, तब ही भारत, भारतीय और भारतीयता से देश साक्षात्कार कर सकेगा. यह स्वभाषा से ही संभव है.

आंग्ल भाषा भारत देश की संस्कृति, इतिहास, जीवनदर्शन को नष्ट कर हमारे स्वाभिमान, गौरव एवं आस्था को नष्ट कर रही है. साहित्य,

संस्कृति एवं समाज का दर्पण होता है. अंग्रेजी के कारण सब नष्ट हो रहा है. अपनी विशिष्ट शैलि में सम्बोधित करते हुए-'भारतीयों सुन रहे हो ना, ये स्वाभिमान की बात है. स्वाभिमान का अर्थ समझते हो?' ये अभिमान की बात नहीं है, मर्यादा की बात है. हमने कायिक और वाचनिक स्वतंत्रता ही नहीं ली अपितु मानसिक स्वतंत्रता भी ली है. जिस कारण अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पुनः जीवित कर ली. संस्कृति भाषा से संबंध रखती है. हमारा वैचारिक आदान-प्रदान, शिक्षण, पठन-पाठन, चिन्तन-मनन, लेखन-वाचन सब कुछ स्वभाषा में होना चाहिए. पूरा देश अंग्रेजी के मामले में सर्वसम्मत नहीं है, फिर भी सर्वतंत्र पर उसने अपना अधिकार जमा रखा है. इससे देश का स्वाभिमान कैसे बढ़ सकता है? आप माँ-पिता के साथ किस भाषा में बात करते हैं? परिवार के साथ आप किस भाषा में बात करते हैं? अपनी भावाभिव्यक्ति किस भाषा भाषा में करते हैं? मातृभाषा के बिना तो कर ही नहीं सकते. नहीं करते हैं तो आप घर के सदस्य कैसे माने जा सकते हैं? इंग्लिश सीख लेने से क्या आप इंग्लिश में रोते हो या इंग्लिश में हंसते हो?

वे कहते हैं, 'आज पूरे देश के शहरों में जहां भी जाओ भारतीय भाषाओं का लोप हो रहा है. सब जगह, इंग्लिश का बोलबाला हो गया है. इसके चलते महिलाएं भी सँस्कार खो बैठी हैं. वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा सब समाप्त हो गया है. क्या इसका नाम स्वतंत्रता है?...मैं इसे स्वतंत्रता नहीं मानता, मैं इसका समर्थक न था, न हूँ, और न रहूंगा. यदि मेरी बात अच्छी लगती हो, तो आप लोगों को इस दिशा में अभियान चालू कर देना चाहिए. यह कोई देशद्रोह नहीं होगा बल्कि देश की संस्कृति को सुरक्षित रखने का पवित्र अभियान होगा. स्वतंत्रता का झूठा अभिमान मत करो, किंतु मर्यादा सिखाने वाली संस्कृति को सुरक्षित करने का स्वाभिमान जागृत करो, यही एक मात्र देशभक्ति है.'

उनका कहना है कि भाषा के माध्यम से भावों का आदान-प्रदान होता है। ऐसे भावों का प्रचार-सम्प्रेषण करें

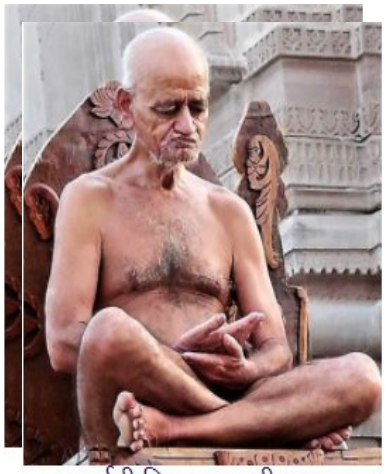

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

जिससे भारत भारत वापस लौट आयें. भाषा की स्वतंत्रता जब तक नहीं तब तक देश की उन्नति आप नहीं कर सकते. आज देशी-विदेशी विद्वानों ने, दार्शनिकों ने, वैज्ञानिकों ने कहा है-जिस राष्ट्र में अपनी भाषा नहीं उसका कभी भी ठीक से विकास नहीं हुआ, 'न भूतो, न भविष्यति.' संत विद्यासागर जी का स्पष्ट मानना है कि शिक्षा को सुलभ और भारतीय परंपरा के अनुरूप बनाने से ही राष्ट्र की तस्वीर को बेहतर बनाया जा सकेगा. आपका मानना है शिक्षा भारत में भारतीय भाषाओं के माध्यम से अनिवार्य होना चाहिए, तब ही भारत की तस्वीर बदल सकती है.

श्रमण संस्कृति के उपासक युगदृष्टा विद्यासागर जी महाराज का मानना है कि शब्दकोश के अभाव में कवि का अस्तित्व नहीं होता है. ग्राम में जो संग्राम हो रहा है, उस पर विराम लगाओ. जनता को उसके अधिकारों से वंचित नहीं रखों. युगांतकारी संत विद्यासागर का चिंतन है कि ज्ञान मेरा स्वभाव है, पर जब सामने कुछ होता है तब जान पाता हूँ. विचारों के लिए वस्तु चाहिए. कुछ कमी हो तो उसकी पूर्ति ज्ञान के माध्यम से कर सकते हैं. इसके लिए आवश्यक है स्वभाषा.

अब जो तरंग उठी है उसे और तेजी से उठाओ. हमें रणनीति और राजनीति से ऊपर उठकर प्राचीन भारत की नीति को अपनाने की जरुरत है. विचार करिए आज भारत के 90 प्रतिशत इंजीनियर बेकार हैं. यह सुनकर बुरा लगता है. ७३ वर्षों में भी हम जो होना चाहिए, कुछ कर नहीं पा रहे है. आज की शिक्षा कठिन दौर से गुजर रही है. निरुद्देश्य शिक्षा कोई मूल्य नहीं रखती है. वह तो ऋण को ही बढ़ाने वाली है. जबकि रोजगार की प्राप्ति नहीं हो पा रही है. सोचने की जरुरत है हम ऋणी क्यों होते जा रहे हैं, परंतु वास्तविक उन्नति तक. नहीं पहुंच पा रहे हैं. परलोक को स्वीकार कर रहे हैं, इहलोक को नहीं देख पा रहे हैं. विदेशी भाषा और शिक्षा नीति पर चल कर गर्त में जाने का रास्ता हम खुद ही बना रहे है. शिक्षा तो दिशाबोध है इष्ट की प्राप्ति के लिए, परंतु अनिष्ट की ओर बढ़ रहे हैं. आप कर्ता हैं, कार्य की दिशा में बढ़े, कर्म को प्रधानता दें और सही दिशा की ओर सही शिक्षा नीति की दिशा में संशोधन कें. विद्यालय का वास्तविक अर्थ जाने. आज विकास के नाम पर अंधानुकरण चल रहा है. जिसे भेड़ चाल कहा जाता है.

विदेशी भाषा में शिक्षा के कारण भारतीय युवा विदेशी सभ्यता को अपनाने के लिए कसरत कर रहे हैं, जो कि मात्र पतन का कारण बनता है. सरल आत्मानुभवी विद्यासागर जी ने जनवरी माह की पहली तारीख को विदेशी सभ्यता से दूर रहने की सीख देते हुए व्यक्त किया कि तारीख नहीं तिथि को सभ्यता मानकर मुहूर्त के अनुसार माँगलिक कार्य किये जाते हैं. भारतीयता के पोषक विद्यासागर जी का कहना है कि भारत का नया साल जनवरी से प्रारंभ नहीं होता है, बल्कि चौत्र महिने से होता है. लेकिन विदेशी संस्कृति का भारतीय लोगों के दिलोदिमाग में स्थान बना लेने के कारण ही जनवरी की एक तारीख को ही नए साल का आगाज मानकर खुशियाँ मनाते हैं. चैत्र माह के प्रारंभ होते ही हमारा नया साल शुरू हो जाता है. नये साल की खुशी चैत्र माह में मनानी चाहिए, विदेशी जनवरी पर नहीं, लेकिन सब कुछ विपरित हो रहा है. अतः आवश्यकता इस बात की है कि भारतीयों को विदेशी संस्कृति को तिलांजलि देकर देशी संस्कृति को अपनाना होगा, तभी जीवन में उम्मीदों की बयार बहने के साथ ही सफलता अर्जित हो जायगी.

135 बाल ब्रह्मचारी मुनि और 172 आर्यिका माताओं के गुरु विद्यासागर जी का मानना है कि संस्कारों की प्रथम पाठशाला माता और पिता होते हैं. द्वितीय गुरु और तृतीय गुरुकुल. माता-पिता के संस्कारों से बालक नींव मजबूत होती है. गुरु आधार शिला बनते हैं और गुरुकुल सम्पूर्णता की ओर ले जाता है. कभी भारत शिक्षा का ऐसा केंद्र था, जहाँ दुनिया भर के लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए लालायित रहते थे. आज ठीक उसके विपरित भारत का भाग्य विधाता युवा अपनी मौलिक शिक्षा को छोड़ कर परदेश की ओर रुख कर रहा है. स्वतंत्रता के बाद हमारे संस्कारों की बुनियाद ही चरमरानगई है और गुरु, गुरुकुल और माता-पिता के संस्कारों की बुलंद इमारत भरभरा कर के धरासयी हो गयी। ये चिंतन, मनन, शोध और अनुसंधान की कसौटी है.

सदगुरु विद्यासागर जी के अनुसार मातृभाषा ही वो जलधार है, जो शिक्षा की प्यास को मिटा सकती है. भाषा तो औषधि का काम करती है. लोककल्याण के भावक विद्यासागर का मानना है कि विद्यालय, विद्यार्थी के समग्र विकास, सामाजिक, राष्ट्रीय प्रगति, सभ्यता व संस्कृति के उत्थान के केन्द्र होते हैं. अनेक विश्व प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र भारत भूमि पर संचालित थे. तपः पूत का चिंतन है कि शिक्षा के प्राचीन ज्ञान-केन्द्र, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वालभी, सौमपुरा, ओडांदपुरी में ज्ञानार्जन के लिए विदेशों से आते थे, ज्ञान की उस प्राचीन विशेषता को पुनः अपनाया जाय. शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से दी जाय. दुनिया की भाषाओं के ज्ञान के लिए हमारी भाषाओं के ज्ञान की खिड़कियां खुली रहे. संविधान सम्मत अधिकारिक राजभाषा हिंदी एवं प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा, प्रशासन और न्याय के क्षेत्र में समुचित महत्व दिया जाय। आपका उदघोष है-'अपना देश अपनी भाषा', 'इण्डिया हटाओ-भारत लौटाओ.' गुरुकुलों के प्राकृतिक परिसरों में ज्ञानी-ध्यानी, तपस्वी, कला -कौशल में निपुण गुरुओं के मार्गदर्शन में शिष्य-शिष्याएँ अपने छुपी अनंत संभावनाओं को प्रकट करते थे. आपकी असीम अनुकंपा और दूरदृष्टि से पल्लवित, पुष्पित व फलित भारत भर में अनूठा व अद्वितीय कन्या आवासीय शिक्षण संस्थान हैं. जहाँ शिक्षा अर्थोपार्जन का साधन नहीं अपितु ज्ञान दान की पावन प्रक्रिया है.

मनुष्य बुद्धि व गुणों के विकास और संस्कारों के संवर्धन से मानव बने और भारत प्रतिभा में निमग्न हो. स्वस्थ्य तन, स्वस्थ्य मन, स्वस्थ्य वचन, स्वस्थ्य धन, स्वस्थ्य वन, स्वस्थ्य वतन, स्वस्थ्य चेतन यह ध्येय है. महागुरु के आशीर्वाद से वैसी गुरुकुल व गुरु-शिष्य परंपराओं की परछाईं है-'प्रतिभा-स्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ. जहां बालिकाओं के जीवन को संवारने के लिए-'जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण' इस सूत्र को लक्ष्य करके जबलपुर-मध्य प्रदेश, चन्द्रगिरी-छत्तीसगढ़, रामटेक नागपुर-महाराष्ट्र, पपौरा-टीकमगढ़-मध्यप्रदेश और इंदौर-मध्यप्रदेश में आपके मार्गदर्शन से बालब्रह्मचारिणी विदुषी प्रशिक्षित शिक्षिकाएं कन्याओं के उज्जवल भविष्य के निर्माण हेतु निष्काम, निस्वार्थ सेवाएँ अहर्निश सेवाभाव से शिक्षा प्रदान करने का दायित्व परिपूर्ण कर रही हैं. सीबीएसई मान्यता प्राप्त शिक्षा के ये सँस्थान आज के आधुनिक परिवेश में प्राचीन गुरुकुलों की स्मृति को पुनर्जीवित कर रहे हैं.

सन् 1992 से युवकों के लिए 'श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन प्रशासकीय प्रशिक्षण सँस्थान' जबलपुर में संचालित है. यहाँ के लगभग पांच सौ युवक मध्य प्रदेश सरकार में सेवारत हैं. दिल्ली में यूपीएससी एवं आईएएस के लिए 'अनुशासन', इंदौर में 'आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास', 'प्रतिभा-प्रतिक्षा' तथा भोपाल में 'अनुशासन सँस्थान' जिसमें संघ व न्यायिक सेवा परीक्षाओं की तैयारी हेतु संचालित है.

-उपाध्यक्ष, वैश्विक हिंदी सम्मेलन
इंदौर-452010, म.प्र.

दाम्पत्य जीवन में जहर घोलता अहम

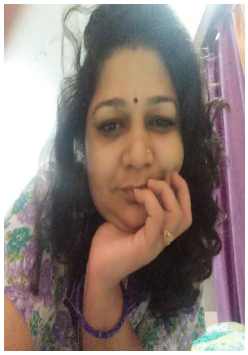

दांपत्य जीवन के दो बराबर पहिए पति और पत्नी होते है. यदि किसी भी पहिए में अहंकार आ जाए तो गृहस्थी का तबाह होना निश्चित है. यदि पति अधिक पढ़ा लिखा है और पति गांव से है या पत्नी अधिक पढ़ी लिखी है और पति अल्प शिक्षित है तो ऐसी स्थिति में अधिक शिक्षित व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का वक्त, बेवक्त अपमान कर देता है और अपने साथी की शिक्षा के कारण कहीं ना कहीं समाज में हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है. पति और पत्नी में से यदि कोई एक अधिक रुपवान और दूसरा कुछ सामान्य है तो रुपवान व्यक्ति कहीं न कहीं अपने रूप के गर्व में चूर हो जाता है और यह घमंड पूरी गृहस्थी में आग लगा देता है.

मैं योग्य हूं, मैं अधिक शिक्षित हूं, मैं बहुत सुंदर हूं, मैं बहुत कामकाजी हूं, मैं बहुत कम आता हूं, मैं बहुत बुद्धिमान हूं, मैं बहुत अच्छा लिखता हूं, मैं बहुत अच्छा बोलता हूं यह छोटी-छोटी चीज है जो बाहर के समाज में प्रशंसा और तारीफ पाती हैं परंतु घर में यदि इन चीजों को रोज प्रशंसा नहीं होती तो व्यक्ति नाराज हो जाता है और अपने गुणों की अनदेखी करने का आरोप लगाता है यही आरोप धीरे-धीरे परिवार के प्रत्येक सदस्य के मन में जहर घोलता है.

समाज में मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपका हितैषी नहीं होता. मैं अपने काम निकालने के लिए भी अनर्गल प्रशंसा या चमचागिरी करता है. परन्तु उसी चमचागिरी से वशीभूत होकर व्यक्ति घर में भी अपने को इसी रूप में अपना सम्मान चाहता है जो व्यवहारिक नहीं है और इस कारण मिथ्या अहम का शिकार हो जाता है.

अपने अहंकार के कारण दूसरे का अपमान पूरी गृहस्थी को तबाह करने का प्रमुख कारण है. इसी कारण हमारे समाज में तलाक के प्रकरण बहुत अधिक बढ़ गए हैं.

-श्री दीप्ति मिश्रा
उपकुलसचिव, प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.

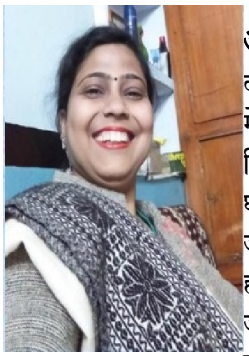

अहम सिर्फ दाम्पत्य जीवन में ही नहीं हर रिश्तें में जहर घोलता है, जहां अहम होगा वहां जहर घुलना ही है. लेकिन इसका सबसे अधिक असर वैवाहिक जीवन पर होता है. क्योंकि वैवाहिक जीवन का मतलब ही होता है हम, मैं नहीं. पति पत्नी साईकिल के दो पहिए की तरह होते है. पति पत्नी साईकिल के दो पहिए की तरह होते है. जैसे हम यह नहीं कह सकते कि अगला पहिया जरुरी है या पिछला पहिया. दोनों पहियों का अपना महत्व होता है. दोनों का काम तुलनात्मक रुप से बराबर होता है. दाम्पत्य जीवन में जब हम से मैं आ जाता है यानि मैं कमा कर लाता हूं, मैं ये करता हूं,, वो ककरता हूं, और दूसरा पक्ष मैं ये करती हूं वो करती हूं. मेरा बिना कुछ नहीं हो सकता तब टकराव की नौबत आती है. केवल दाम्पत्य जीवन में ही नहीं सामाजिक, पास पड़ोस, कार्यालय में भी अहम आ जाने पर टकराव होता है. लेकिन वहां इसलिए चल जाता है कि वहां दूरी होती है. हम धीरे धीरे भूल जाते है. अहम किसी भी रिश्ते के लिए जहर होता है.

--श्रीमती शिखा गिरी, शिक्षिका, नैनी, प्रयागराज-**श्रीमती शिखा गिरी,** शिक्षिका, नैनी, प्रयागराज-

पति-पत्नी दांपत्य जीवन के 'आधार स्तंभ' हैं. यह आधार स्तंभ समानता और आदर भाव के बल पर टिका हुआ है. जब हम स्वयं को श्रेष्ठ समझ कर, दूसरे के अस्तित्व को अनदेखा करते हैं तब एक छोटी सी समस्या भी विकराल रूप ले लेती है. इस प्रकार दांपत्य जीवन में जहां सहयोग और सम्मान होना चाहिए वह मात्र एक दोषारोपण का कारण बन जाता है जहां पति-पत्नी का औचित्य नहीं रह जाता. वे मात्र एक प्रतिद्वंदी रह जाते हैं जो हमेषा एक दूसरे को नीचा दिखाने हेतु आतुर रहते हैं तथा साथ ही एक दूसरे की छोटी सी छोटी गलती ढूंढ कर

निकालना व उस पर अनावश्यक रूप से बहस करना आदि चीजें आरंभ हो जाती हैं जो पति और पत्नी के रिश्ते को तो प्रभावित करती ही है, घर का भी माहौल खराब होता है.

'अहम भाव' वह सर्प है जो व्यक्ति के साथ साथ पूरे परिवार को अपने जहर से प्रभावित करता है. अहम रूपी सर्प का दमन दांपत्य जीवन में आवश्यक है. तभी हम एक दूसरे का सहारा भी बन सकते हैं तथा एक अच्छे मार्गदर्शक भी हो सकते हैं जो हमारे दांपत्य जीवन को एक अच्छा स्वरूप प्रदान कर सकता है.

-लक्ष्मीकांत वैष्णव, चांपा, जांजगीर, छ.ग.

इस कालम के अंतर्गत प्रत्येक माह एक ज्वलंत मुद्दा देते हैं. दिए गये मुद्दे पर आपको अपने विचार 150–200 शब्दों में टाईप कर या लिखकर उसकी फोटो अगले माह की 30 तारिख तक ई-मेल आईडी vsnehsamaj@rediffmail.com या ह्वाट्सएप नंबर 9335155949 पर भेज सकते हैं. साथ में अपनी फोटो, नाम एवं पता भेजना न भूलें. सर्वोत्तम तीन विचारों को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा. विषय में आज का मुद्दा अवश्य लिखे. लगातार तीन मुद्दो में चयनित होने पर सम्मान पत्र भी दिया जाएगा. इसमें कोई उम्र का बंधन नहीं है.

इस माह का मुद्दा

ईवीएम या वायलेट से मतदान होना चाहिए

अभिमान को आने मत दो, और स्वाभिमान को जाने मत दो, क्योंकि अभिमान आपको उठने नहीं देगा, और स्वाभिमान आपको गिरने नहीं देगा.

धारावाहिक उपन्यास

"मुगल-ए-आजम की विरासत"

डॉ० अरुण कुमार आनन्द, चन्दौसी, संभल उ०प्र०

ईस्लाम धर्म का कट्टर धमधि शुष्क हृदय का साहित्य-संगीत काव्य कला विहिन माना जाने वाला मुगल सलतनत का बादशाह जो अपने अब्बा हूजूर को कैद करके अपने भाइयों का कत्ल करवा कर 1659ई० में दिल्ली सल्तनत के वैभवशाली राज गददी पर बैठा अबुल मूज्जफर, अली मोहिउद्दीन गजनवी, उर्फ आलमगीर औरंगजेब गजनवी 'बादशाह' हिन्दुस्तान' गाजी उपाधि के साथ राज सिहासन पर बैठते ही अपने श्रेष्ठ वफादार सिपाह सालार मौ० वाजिद खाँ को सल्तनत का वजीर घोषित कर दिया था।

'इश्क की आग में सब कुछ भस्म हो जाता हैं, समुद्र में हजारों जहाज तिनके के तरह डूब जाते हैं. इश्क की आग में इंसा तो क्या पीर-पैगम्बर भी फना हो जाते हैं. इसी को 'पाकीजा' कहा जाता है. वजिरखांन की मुहब्बत भी कुछ ऐसा ही पाक इश्क था.

उस मुगल वंश के छठे बादशाह औरंगजेब गाजी को जो मुल्क का क्रूर राजनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ और बहादूर योद्धा ईतिहास कारों ने माना था, तो वहीं वजीर वाजिद खां भी अपने बादशाह से कम नही था. उसके असर हृदय में भी मुहब्बत का जजबा रससित धारा में बह निकली थी, वजिर खाँ गाजी ने अपने जीवन में सिर्फ एक बार-ही किसी मासूका से मुहब्बत किया था, जबकि उसमें क्रूरता के अतिरिक्त कुछ नही था, उसका बेरहम दिल किसी को बकस्ता नही था, से मुहब्बत की उम्मिद करना नाहक था. मुहब्बत वह भी एक काफीर माने जाने वाली हिन्दू धर्म की लड़की से, यह उसका पहला और आखिरी मुहब्बत थी. कहावत है 'भरी जवानी में गिरगिट को भी शवाब आ जाता है, मुहब्बत में पहाड़ों के दिल भी मोम की तरह पिघलने लगते हैं. इश्क की आग में सब कुछ भस्म हो जाता हैं, इश्क की आग के समुद्र मे हजारों जहाज तिनके के तरह डूब जाते हैं. इश्क की आग में इंसा तो क्या पीर-पैगम्बर भी फना हो जाते हैं. इश्क का दरिया सब कुछ बहाकर ले जाता है. इसी को 'पाकीजा' कहा जाता है. वजिरखांन की मुहब्बत भी कुछ ऐसा ही पाक इश्क था.

तब बुरहानपुर-खंडवा और भूसावल मराठवाड़ा राज्य का क्षेत्र-अंग था इन कस्बों के बीच ताप्ती नदी के किनारे बसे शारावत सम्प्रदाय के कबीलों के गांव के सुबेदार मीर खलील खाँ के पेड़-पौधों से भरपूर बाग़ और उनका शाही शानदार राजमहल का पाइबाग़ मौसमी फल फूलों से भरपूर रहता था. वहीं एक वृक्ष के नीचे खड़ी नवयौवना युवती आम की नीची सी डाली को उछल कर पकड़ने का असफल प्रयास कर रही है. कुछ ऊँचाई पर लगें फल को तोड़ने के प्रयास में निस्तम्भ भी

उछल रहे हैं. आमफल उसकी नाजुक बांहों की पहूंच से कुछ दूर पड़ रहा है. उस अल्लहड़ युवती का चेहरा इस असफल की बूंदे उभर आई है. आगे-पीछे कुछ ध्यान किए बिना ही वह फल तोड़ने में व्यस्त है.

पसीन की नन्हीं-नन्हीं बूंदें चेहरे पर चमक रही है. ऐसे मदमस्त यौवन के सामने मानो पत्थर भी पिघल जाते हों तो भला पत्थर दिल इंसान वशीभूत क्यों न होगा? वजिद खां भी उसके मदमस्त यौवन को देखकर दिवाना हो गया था. उसके पत्थर दिल में भी मुहब्बत की आग भड़क चुकी थी. उसकी बड़ी-बड़ी रस भरी रक्तनारी सी आंखों के उपर जुल्फों की एक लट आकर मानों खिले गुलाब से चेहरे से पसीनों की बूंदों को अपने में समेट लेना चाहती हो. लाल होंठों को, मोती समान दांतों से दबाकर बारबार फल तोड़ने का प्रयास, उसका उन्नत वक्ष उपर नीचे हो रहा था माथे की ओढ़नी-चूनरी कब की सरक कर नीचे जा गिरी है, उसे पता ही नही चला. भरपूर जवानी और हुस्न शबाब से परिपूर्ण यह अल्हड़ मदमस्त नवयुवती 'मीना' (मीना शहावत) शहरावत सम्प्रदाय के कबीले की लड़की जिसे खाना बदोश कबीला कहा जाता है. पास ही के शहरावत बस्ती की है. गोल चेहरा सुन्दर नाक नकस और अकर्षक गोरी कावा, चोली घाघरा में छुपा उसका गठीला सूडौल गोरा बदन अनायस ही मर्द को अपनी तरफ आर्कषित और सम्मोहित कर जाता था. अकस्मात पीछे से किसी को मर्दाना हाथ आगे बढ़ कर फल तोड़ लेता है. युवती यह देख हड़बड़ा कर चिहुंक पड़ती है. उसके हाथ से डाली छूटकर उपर चली जाती है. और वह एक झटके से पीछे मुड़ती है, सामने लम्बा चौड़ा मर्द को खड़ा देखकर स्तब्ध रह जाती है. शाही लिबास में ढका वह युवक आमफल हाथ में लिए मीना की तरफ आस्कक्त दृष्टि डाल कर मुस्कुरा रहा था. इससे पहले कि मीना कुछ बोलें, उसकी ओर मुखातिब होकर बोला- ''गुस्ताखी माफ हों, मैं बहुत देर से दूर खड़ा देख रहा था फल तोड़ने के लिए आप बहुत कोशिस कर रही हैं, मगर, गुस्ताख फल आप के हाथों से दूर होता जा रहा था, तौ मैने लपक कर तोड़ लिया-शायद हमसे बड़ी-गुस्ताखी हो गई, यह लिजिए आपके खिदमद में माहे दस्तूर-हाजिर है फल!'' (उसने आम मीना के सामने बढ़ा दिया था एक तो मर्द दूसरे बाग़ में आने की जुररर्त की, और माफी मांग रहा है बेगैरत, मीना को जैसे होस आ जाता है, अपनी ओढ़नी को सिरंपर ढांपते हुए सामने खड़े युवक को ऊपर से नीचे तक एक गहरी नजर से देखने के बाद जर्क-वर्क शाही पोशाक सिरपर रत्न जडित्रत कीमती दस्तर (मुकुट) के बीच अमूल्य हीरा अपना जगमग आभा वातावरण में बिखेर रहा ह. कमर में रत्न जड़ित मियान के अन्दर लटकी लंब्बी तलवार, शानदार व्यक्तित्व कंटीली तलवारकट भौवें, भारी भरकम रोबिला फ्रेंच कर दाड़ी युक्त चेहरा, बड़ी बड़ी तेजस्वी आँखों के बीच खिल रही मुस्कान, भारी भरकम लम्बा तगड़ा सजिला नौजवान, उसने सोचा यह कोई साधारण आदमी तो नही हो सकता. वह माथे पर ओढ़नी खींच लेती है, पर कुछ लटें विद्रोही मुद्रा में झांकती रहती हैं. पलकें नीचे झुक जाती हैं, यह देख युवक हाथ बढ़ा कर आम उसे थमा देता है. मीना की भौवें कुंचित हो जाती है. निगाहों में बनावटी क्रोध है-''आप कौन है, बाग़ में किसकी इजाजत से आए है?''

बड़े बे गरत है-आपको क्या मालूम नहीं यह शाही जनाना बाग़ है?'' युवक के कान में जैसे किसी ने खटटे-तीखें रस की पिचकारी मार दी हो. ''यहां जब आप खुद मौजुद हो किसी की इजाजत की जरूरत क्यों? क्या शब्बे दस्तूर काफी नही?

(मीना के नेत्रों से चिंगारी सी छूटी उसने वह फल धरती पर दे मारा. वह युवक जो खुद हिन्दुस्तान का सल्तनते आदिल बादशाह वाजित वजीर था. उसका चेहरा इस अपमान से तमतमा उठा था. अगर युवती की जगह कोई और होता तो सिपाहियों को बुला कर उसी वक्त सूली पर चढ़वा देता. लेकिन वह तो हुस्न के इश्क में मजबूर था. खून का घूंट पीकर रह गया. हुस्न-ए-तबशुम पर एक नजर डाल कर-गुस्से को हल्का करते हुए- ''मासा अल्लाह आपकी खूबसूरती की खूशबू के सामने यह मगरूतियत कैसी, किसी की इजाज्त की जरूरत है क्या, बर्ना हमें कहीं भी जाने के लिए किसी की इजाज्त की जरूरत कबसे होने लगी, शबाब-ए-बानो, किबला हमें आपके शै-पहचान की जरूरत ने यह जरूरत ने यह गुस्ताखी करने पर मजबूर न किया होता? तो हमव ह गुनाह कभी नही करते- सजाए जुर्म के हकदार है तो सजा भी कबूल है.''

'बे गैरत, जनबा, आप बड़े गुस्ताख हैं, जनना से कैसे गुप्तगूं किया जाता है, इतना भी इल्म नही जानते, नही-फौरन वहां से चले जाईए वर्ना, वजीरे आदिल से दरख्वास्त कर सर कलम करने का फरमान जारी करवा दिया जाएगा, बादशाह सलामत आलमगीर के मुगल सल्तनत के वसूलों से वाकिफ नही है क्या?'' **क्रमशः....**

जिन्दगी की नाव

जिन्दगी की नाव,
इक लम्बी नदी,
कई उतार-चढ़ाव,
अच्छी लगी।
अचानक इक तूफान
में फंसी, कि भंवर भी
समेट ले गया, पता ही
न चला, कब मेरे चप्पू
मेरे हाथों से छूट बह गये
पानी मेंख् हो गई मैं अकेली
अनाथ उस नाव पर, जिसमें
संजोए थे मैंने अनगिनत सपने,
मन आवाजें लगाता, चीखती मेरी
आत्मा, पर अनायास
सूख गई नदी, बह गये सपने
व धीरे-धीरे मेरी नाव भी
निकल गई मुझे छोड़कर अकेला
सिर्फ उस ऊँचे पत्थर पर,
जहाँ से कभी देख सकती थी मैं
उफनता पानी, छलकती लहरें
व उन्माद संगीत।
आती है नजर इक उम्मीद कि
कभी पानी बरसेगा, नदी बहेगी,
मेरी नाव आयेगी,
मेरी नाव फिर से आयेगी।

स्वप्न

गोद में नन्हें को लिये,
मुस्करा रही थी,
खुद ही खुद बतिया
रही थी,
मेरा राजा बेटा, मेरा
राजकुमार
मेरी आँखों का तारा
मेरा राजदुलारा,
कब बड़ा होगा?
मम्मा के लिये लाएगा
इक सुन्दर सी दुलहन
घूमेगी, खाना पकाएगी,
पाँव दबाएगी,
कटेगा बुढ़ापा उस नन्हीं
सी जान की आस पर!
नहीं करेगी अलग वह
पल भर भी, इस नन्हीं जान को,
बड़ा होगा तो क्या?
उसके लिये तो 'नन्हा' ही रहेगा।
पास बैठी बेटी सुन रही सब
कि भोली भाषा में बोल बैठी
''माँ, ऐसा कुछ नहीं होगा,
तूने दादा-दादी को घर से
निकाला है,
जमीन पर सुलाया है,
कभी सेवा नहीं की,
पापा को उनसे बतियाने
भी नहीं दिया,
मुझे भी उनके पास
जाने नहीं दिया।''
सुनकर स्तब्ध, हैरान व बेचौन
सोच अपना वही कंटीला भविष्य
जो उसने बो दिया था।

इन्तजार

बीती रात,
झकझोर दिया इक ख्याल ने
उठ बैठी
अंधेरी काली रात में
चहुँ ओर सिर्फ अन्धकार,
बुझ गये सारे दीये,
अरे, कोई टिमटिमा भी नहीं रहा,
ये बेबुनियाद लम्हें
ये सरकती सी जिन्दगी
पूछती सिर्फ इक सवाल
अब किसका इन्तजार
सलाम होता कुर्सी, जवानी व
पैसे को,
विदाई ले चुके यह सब
रह गई सिमटी सी देह,
खुश्क आँखें, कंपकंपाते हाथ,
टपकती छतें व सिलवटों
से भरे बिस्तर,
नाहक जीने की चाह,
ख्याल जीत गया,
पूछ ही बैठा दोबारा,
बता अब किसका इन्तजार।

-**शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि.प्र.

संदेश

संदेश आज है सिर्फ एक
घर के अन्दर ही रहो नेक
कोरोना मरने वाला है
हटने वाली है सभी टेक।

घर से बाहर भी खतरा है।
कोरोना हर सु पसरा है।
वह उसकी पकड़ से बाहर है।
जो घर के अन्दर ठहरा है।

ईश्वर का भजन करो घर में।
प्रभु का स्मरण करो घर में।
यह मेरी बात सटीक सुनो।
तुम पूर्ण सुरक्षित हो घर में।

अब बार बार क्या कहूँ मित्र।
स्थिति आज कल है विचित्र।
दिल में एक दर्द उभरता है।
टीवी पर इसके देख चित्र।

मेरे अपनो मेरे सपनो।
आकुल व्यकुल भी मत होना।
है कड़ी धूप घर में ठहरों।
मरने वाला है कोरोना।

मन तो मन है मन की इच्छा।
पूरी की है हर तरह सदा।
मन को भी पूर्ण नियंत्रण में।
रखना पड़ता है यदा कदा।

-हितेश कुमार शर्मा,
गणपति भवन सिविल लाईन
बिजनौर-246701 उ०प्र०

कौमी अदावत

यह जंग ए अदावत कैसी?
ज्हां में यूं न फैलाओ बगावत लोगों।
छुनियां से जाना है सबको,
ऑसू किसी के न गिराओ लोगो।
दुआ से मिले की गम न जानो,
बद दुआ के कहर से खौफ खाओं लोगो।
यह जन्म मिला हैं खुदा इबादत के लिए,
नफरत की आंग न लगाओ लोगों।
गरीब अमीरी जीवन के दो पहलू,
गरीबो को यूं सताओ लोगों।
जियो खुद औरो को जीने दों।
पुरानी अदावत को भुलाओ लोगो।
जमी है उसका मुल्क ए जहां उसका,
तुम खुदा के तहबीर लकीर न बनाओ लोगों।
मजहब और रिवाजो, शरहद पर,
जिन्दगी को यू न चढ़ाओ लोगों।
मि बैठ अपने झगड़े मिटा डालो,
दौड़ थाना अदालत न जाओ लोगो।
वह इल्म सबको इंसा बना दे,
दुश्मन को भी न अलगाओ लोगों।
मिली जिन्दगी तो हर हाल गुजारी हमने,
मातम है किस बिना? सब साथ निभाओ लोगों।
धर्म जाति को न आने दो पास अपने,
नफरत परदा बंद लगाओ लोगो।
गमों को खरिदो मुहब्बत बांटो यारो,
गिरे को गले लगाओ लोगों।
जमाना उन्हे याद करता है
जहां से जाने के बाद लोगों।
जो अमन के लिए छोड़ जाते निशां
उस चिराग को सदा जलाओ लोगों।

-डॉ० अरुण कुमार आनन्द, चन्दौसी, संभल उ०प्र०

सृष्टि का आधार हो

नारी! नहीं केवल श्रद्धा हो, सृष्टि का आधार हो।
शक्ति रूपिणी, माँ दुर्गा हो, प्रेम की पारावार हो।
शहनशक्ति की सीमा हो तुम।
परिवार हित, बीमा हो तुम।
तुम ही प्रेयसी, भगिनी, माता,
सहधर्मिणी, वामा हो तुम।।
गृहलक्ष्मी तुम, धन की देवी, ज्ञान की देती धार हो।
नारी! नहीं केवल श्रद्धा हो, सृष्टि का आधार हो।।
तुम हो अल्पना, तुम हो कल्पना।
तुम्हीं दिखातीं, नर को सपना।
सर्वस्व ही, न्यौछावर करतीं,
जिसे मानती हो वश अपना।
शिव की शक्ति, भक्त की भक्ति, त्रिगुणों की तुम सार हो।
नारी! नहीं केवल श्रद्धा हो, सृष्टि का आधार हो।।
राष्ट्रप्रेमी की यही कामना।
सीमित रहे ना, कोई भावना।
उन्नति के नित शिखर चढ़ो तुम,
नहीं चाहता, तुम्हें थामना।
जहाँ पर जातीं, स्वर्ग बनातीं, भले ही कारागार हो।
नारी! नहीं केवल श्रद्धा हो, सृष्टि का आधार हो।।

-डॉ.संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी
जवाहर नवोदय विद्यालय, महेंद्रगंज, मेघालय

ग़ज़ल

यादों की इक अनमिट चिट्ठी लिक्खी होती है
पढ़ पाते हैं उतनी, जितनी लिक्खी होती है
साँसे, धड़कन सबको मिलती हैं पर गिनती की
जीस्त/उम्र मगर जीते है, जितनी लिक्खी होती है
चंद लकीरों ने ही सारा जीवन बाँच दिया
हर रेखा में एक कहानी लिक्खी होती है
कौन चलेगा साथ हमारे, किसको कौन वरे
किस्मत में वो खास निशानी लिक्खी होती है
केवल राधा ही मोहन को पूर्ण नहीं करती
मीरा-सी भी एक दिवानी लिक्खी होती है
केवल रात अमावस की ही भाग्य नहीं लिखता
उसने तो शब 'पूनम' की भी लिक्खी होती है।

-डॉ० पूनम माटिया दिलशाद गार्डन, दिल्ली

कोरोना नहिं गया

पूरी तरह से खुल गए, फिर से हाट बाजार।
बस, रेलें, ऑटो चले, मोटर साईकिल, कार।
मोोटर साईकिल, कार, दशहरा, आई दिवाली।
घर-घर दीपक जलें, लक्ष्मीं लाएं खुशहाली।
कहत बरैया राय, रखो ससामाजिकक दूरी।
कोरोना नहिं गया, सुरक्षा करिये पूरी।

-डॉ० राम सहाय बरैया
ग्वालियर, म.प्र.

कहानी

युक्ति

-ओम उपाध्याय
टी.टी. नगर, भोपाल, म.प्र.

झापड़ी तीन चार सौ की बस्ती वाला छोटा सा गाँव. गाँव में खेतिहर किसानों के साथ बढ़ई, लुहार, सुनार, पंडित, पुजारी, कहार, नाई, धोबी, मोची आदि के इक्के, दुक्के, कच्चे, पक्के घर और मजदूरों की झोपड़ियाँ थी. गाँव का मुख्य धधा खेती किसानी व पशुपालन था. झापड़ी छोटा सा गाँव सब एक दूसरे से परिचित एक दूसरे के सुख- दुःख में काम ओ वाले. यूँकि गाँव में खेतिहर किसानों के आबादी अधिक होने तथा गाँव का मुख्य धँधा खेती किसानी होने के कारण अन्य सब जैसे बढ़ई, लुहार खेती के कार्यो में उपयोग लाने वाले औजारों का निर्माण करते टूटे हुए उपकरणों की मरम्मत करते तथा शेष जैसे सुनार आभूषण बनाते, गहनों की मरम्मत करते, कुम्हार ईटें, मटके वगैरह बनाते, पंडित, पुजारी, कहार, मोची आदि सब अपने अपने धँधों से जीवन यापन करते थे. गाँव में जो खेतिहर मजदूर थे वे संपन्न किसानों के खेत-खलिहानों में रोजनदारी, माहवारी व वार्षिक मजदूरी पर काम करते. मजदूरों के बच्चे उन्हीं संपन्न किसानों के पशु गाय, बैल, भैंस, बकरियाँ चराते.

झापड़ी गाँव का जीवन बड़ा ही सीधा सादा था. गाँव में एक प्राथमिक स्कूल था, स्कूल में पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाई होती थी. पाँचवीं कक्षा के पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए गाँव से दो किलोमीटर दूर धरगाँव कस्बा था जहाँ ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़ाई की सुविधा थी. पाँवीं कक्षा के बाद की पढ़ाई गाँव के सम्पन्न किसानों के इक्का दुक्का पुत्र पुत्रियाँ ही जारी रखते शेष तो अपने पैतृक व्यवसायों में जुट जाते. झापड़ी गाँव में वैसे तो सब कुछ था टी.वी. टेलीफोन, वाहन आदि-आदि बस केवल सड़क नहीं थी. धरगाँव तक के दो कि.मी. रास्ते को पैदल, बैलगाड़ी या दुपहिए वाहन से तय करना पड़ता था.

कल्लु लल्लु ने मंगतु चाचा से राम-राम की फिर अपने आने की वजह बताई. दोनों ने कहा चाचा हमें कोई भी काम दिलवा दो, बस क्रिकेट के गेंद खरीदने के पैसे चाहिए. मंगतु चाचा ने कुछ सोचा फिर उन्हे याद आया कि आज का हाट त्याहारों के पूर्व का हाट है इसलिए खूब रौनक रहेगी और जूते, चप्पल, सुधारने के अलावा पॉलिश करने का काम भी निकलेगा जिसे वा अकेला नहीं संभाल पायेगा.

धरगाँव बड़ा कस्बा था. वहाँ हायर सेकेण्डरी स्कूल, सरकारी अस्पताल ग्राम पंचायत वगैरह-वगैरह सब कुछ था. धरगाँव में पक्की सड़क थी जो दोनों ओर तहसील मुख्यालयों क्रमशः महेश्वर-बड़वाह को जोड़ती थी. धरगाँव में प्रति गुरूवार को एक बड़ा हाट बाजार लगता था जहाँ झापड़ी के अलावा आस-पास के कई गाँवों के किसान, ग्रामीण जन, छोटे व्यापारी व अन्य खरीदी बिक्री के लिए विभिन्न वस्तुएँ लेकर आते तथा अपनी (साप्ताहिक) आवश्यकताओं की चीजें खरीद कर ले जाते.

धरगाँव में हाट बाजार के दिन गुरूवार को बहुत चहल पहल रहती और ढेरों सामग्री की खरीदी बिक्री होती.

झापड़ी गाँव में कई सम्पन्न किसान थे किंतु गाँव के पटेल मोतीलाल सर्वाधिक संपन्न थे. उनके पास जोतने के लिए सर्वाधिक जमीन थी जिले वे सालाना मेहनताना पर स्थायी मजदूरों से खेती बाड़ी का कार्य संपन्न करवाते थे. पटेल मोतीलाल के खेतों में काम करने वाले अस्थायी मजदूरों में एक स्थायी मजदूर मांगीलाल भी था. माँगीलाल मेहनती ईमानदार व विश्वास पात्र मजदूर था यही कारण था कि वर्षो से वह पटेल के यहाँ कार्य कर रहा था पटेल मोतीलाल उसे बहुत मानते थे.

माँगीलाल की झोपड़ी गाँव के अंतिम छोर पर थी उसके पड़ोस में नानुराम का छप्पर था. नानुराम चलने फिरने में असमर्थ था माँगीलाल का एक पुत्र था कालुराम जिसे गाँव वाले कल्लु कहकर बुलाते नानुराम के दो बेटे व एक बेटी थी. नानुराम के बड़े बेटे का नाम लालुराम था जिसे सब लल्लु लल्लु कहकर पुकारते थे. 'कल्लु' और

'लल्लु' हम उम्र थे और दोनों में दाँत काटी दोस्ती थी.

'कल्लु' 'लल्लु' ने केवल दूसरी कक्षा तक पढ़ाई की थी और अब वे गाँव के सारे मवेशियों को झोपड़ी गाँव के पास कुछ दूरी पर स्थित चारागाह में चराने का काम करते थे 'कल्लु' गाय बैल भैस बकरियों को मैदान में चरने को छोड़ देते और दोनों कभी बतियाते, कभी ग्रामीण खेल खेलते कभी-कभी उनका साथ देने गाँव के अन्य बच्चे भी आ जाते. शाम को सूर्यास्त के समय दोनों सारे जानवरों को एकत्रित करते और हाँकते हुए गाँव ले आते जानवर अपने-अपने घरों में चले जाते और कल्लु, लल्लु अपने घर.

जब से टी.वी. गाँवों में पहुंचा है ओ. वी. ने क्रिकेट को भी गाँवों में पंहुचा दिया. अब गाँवों में भी क्रिकेट के शैकीन हो गए. इधर झापड़ी गाँव के पटेल मोतीलाल को भी टी.वी. पर क्रिकेट मैच देखने का शौक लग गया था. वे अकसर टी.वी. पर मैच देखतें कभी-कभी कल्लु लल्लु भी गाँव के कुछ लड़कों के साथ कल्लु लल्लु को भी क्रिकेट का चस्का लग गया. गाँव के अन्य लड़कों की भाँति वे भी क्रिकेट खेलना चाहते थे किंतु उनके पास 'गेंद' व बल्ला नहीं था जिससे वे मन मसोसकर रह जाते थे.

दिन बीतते रहे एक दिन मवेशी चराते चराते कल्लु ने लल्लु से कहा- यार, गाँव के खेल तो हम रोज ही खेलते है. ये खेल खेल खेलकर बोर हो गए कभी क्रिकेट भी तेा खेलकर देखें.

किंतु हमारे पास गेंद है न बल्ला, फिर कैसे क्रिकेट खेले? लल्लु ने पूछा!

कल्लु ने कहा-लल्लु! बल्ले की जुगत के लिए मुझे एक उपाय सूझा है.

क्या? लल्लु ने कहा

लल्लु, क्यों न हम किसी सूखे पेड़ की शाख काट लें और बढ़ई चाचा ने बल्ला बनवा लें-कल्लु ने उपाय सुझाया.

फिर गेंद का क्या करेंगे? गेंद कहाँ से लाएँगे. लल्लु ने पूछा

उसका फिर सोचेंगे, पहले बल्ला तो बनवाएँ- कल्लु ने कहा.

लल्लु को कल्लु की तरकीब बहुत पसंद आई और फिर उन्होंने चार छह दिनों की मेहनत से एक सूखे पेड़ की सूखी डाली तोड़ी जिसे बढ़ई चाचा ने बल्ले का आकार दे दिया. कल्लु लल्लु के पास बल्ला तो हो गया अब केवल केंद का इंतजाम करना था. गेंद के लिए कल्लु लल्लु ने पहले तो फटे कपड़ों, बेकार सामान व अन्य चीजों का इस्तेमाल किया और गेंद बन ली गई किंतु वह क्रिकेट के खेल के लिए उपयुक्त नहीं थी. अंत में दोनों ने तय किया कि इस बार के धरगांव के साप्ताहिक हाट बाजार में चलेंगे तथा वहाँ मेहनत, मजदूरी, हम्माली या अन्य कोई काम करेंगे तथा उससे जो पैसे मिलेंगे उससे गेंद खरीद लेंगे. साप्ताहिक हाट गुरूवार के एक दिन पूर्व बुधवार को कल्लु-लल्लु ने मवेशियों को चाराने का इंतजाम किया. उनके मालिकों को अपने हाट बाजार जाने का प्रयोजन बताया, घर वालों से अनुमति ली. इस तरह सब प्रबंध कर अमले दिन दोनों सुबह ही हाट बाजार के लिए धरगांव की ओर चल पड़े.

लगभग आधे घंटे के पश्चात कल्लु-लल्लु धरगाँव के हाट बाजार में थे. हाट बाजार में अभी दुकानें लगना ही शुरू हुई थीं कल्लु और लल्लु घूमते वहाँ पहुंचे जहाँ झापड़ी गाँव के ही मंगतु चाचा मोची की दुकान लगाते थे. कल्लु लल्लु ने मंगतु चाचा से राम-राम की फिर अपने आने की वजह बताई. दोनों ने कहा चाचा हमें कोई भी काम दिलवा दो मजदूरी, हम्माली, चौकीदारी कुछ भी हमें बस गेंद खरीदने के पैसे चाहिए. मंगतु चाचा ने पहले कुछ सोचा फिर उन्हे याद आया कि आज का हाट त्यौहारों के हाट के पूर्व का हाट है इसलिए बाजार में खरीदी बिक्री करने वालों की भारी भीड़ रहेगी, खूब रौनक रहेगी और जूते, चप्पल, सुध ाारने के काम के अलावा जूते चप्पलों पर पॉलिश करने का काम भी निकलेगा जिसे वा अकेला नहीं संभाल पायेगा. उसे एक दो सहायकों की जरूरत पड़ेगी सो उसने कल्लु लल्लु से कहा- बेटे, कल्लु, लल्लु एक काम तो मैं ही तुम्हें दे सकता हूँ यदि करना चाहो तो.

नेकी और पूछ-पूछ, कल्लु लल्लु बोले- चाचा आप तो काम बताओ!

देखों बेटे कल्लु लल्लु यह जो आज का हाट बाजार है यह त्यौहारों के पहले का हाट है इसलिए आज हाट बाजार में भारी भीड़ रहेगी. आज बाजार में जूते चप्पलों की मरम्मत व अन्य कार्यो के अलावा जूते चप्पलों पर पॉलिश करने का काम भी बहुत निकलेगा. मेरे पास तो कोई और काम करने वाला है नहीं फिर मैं अकेला कितना काम करूँगा यदि तुम दोनों चाहो तो जूते चप्पलों पर पॉलिश करने का काम तुम्हे दे सकता हूँ. यह काम भी हल्का फुल्का है जिसे तुम आसानी से कर सकोगे रही बात ब्रुश और पॉलिश की तो वह मैं तुम्हें दे दूँगा बस मुझे पॉलिस की डिब्बियों के पैसे दे देना. बोलों, मजूर है? मंगतु चाचा बोले.

हाँ चाचा, हमें मँजूर है-दोनों बोले.

हाँ चाचा, हमें मँजूर है-दोनों बोले तो फिर ये लो ब्रुश और पॉलिश की

डिब्बियाँ और शुरू हो जाओ. मंगतु चाचा ने कहा अभी बाजार में ग्राहकों की भीड़ बढ़ने वाली हैं और तब तुम्हें दम मारने की फुरसत की नहीं मिलेगी.

और सचमुच वही हुआ जो मंगतु चाचा ने कहा. कल्लु लल्लु शाम तक जूते चप्पलों पर पॉलिश का काम करते रहे. शाम को जब दोनों ने जूते चप्पलों पर की गई पॉलिश की आय को गिना तो दोनों की बाछें खिल गई. मंगतु चाचा को पॉलिश की डिब्बियों के रूपये देने के पश्चात उनके पास इतने पैसे बचे कि उनसे उन्होंने न सिर्फ गेंद खरीदी मिठाई नमकीन खाया वरन कुछ सामान, नमकीन, फल आदि भी घर वालों के लिए खरीदे. शाम को जब दोनों गाँव लौट रहे थे तो बहुत प्रसन्न थे.

झापड़ी लौटने के पश्चात दूसरे दिन जब कल्लु लल्लु जानवरों को चराने अपने नियत मैदान पर गए तो साथ में 'बल्ला' व 'गेंद' भी ले गए. वहाँ मैदान में कल्लु लल्लु ने जानवरों को तो घास चराने को छोड़ा और दोनों क्रिकेट खेलने मे जुट गए. चूँकि क्रिकेट खेलने वाले वे दो ही थे इसलिये बारी-बारी से बल्लेबाजी और गेंदबाजी करते रहे. कल्लु लल्लु ने इसके पहले केवल दूरदर्शन पर क्रिकेट मैच देखे थे कभी खेला नहीं था उन्हें पहली बार क्रिकेट खेलने में बहुत मजा आया. आज उनकी क्रिकेट खेलने की चाह पूरी हो गई थी.

एक दो दिन के पश्चात जब गांव के अन्य लड़कों को पता चला कि कल्लु लल्ल के पास क्रिकेट का सारा सामान है तो वे भी उनके साथ क्रिकेट खेलने आने लगे. सच है जहां इच्छा वहाँ रास्ता.

प्रेरक प्रसंग

सच्ची लगन सफलता की शर्त है

मैक्समूलर की माँ की हार्दिक इच्छा थी कि उसका बेटा देश का कोई बड़ा अधिकारी बने. एक विधवा होते हुए भी उसने मैक्समूलर की पढ़ाई में कोई कमी नहीं की, लेकिन मैक्समूलर की तो दूसरी ही धुन थी. वह कहता, 'नहीं, माँ मुझे संस्कृत पढ़ना है, वे संस्कृत के अध्ययन में जुट गए. लिपजिंग कॉलेज में अध्ययन के दौरान इन्हें यह आश्चर्य हुआ कि अंग्रेजी के अनेक शब्द संस्कृत से निकले है यथा-डॉक्टर-दुहित्र से, फादर-पितर से, मदर-मातृ से, वाइफ-वधु से तथा ब्रदर-भ्रातर से. उन्हें गुरू की खोज में पेरिस जाना पड़ा. पेरिस में बर्नूफ को पाकर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हुई. जब इन्होंने वेद अध्ययन की इच्छा व्यक्त की, तो गुरू ने कहा-'तुममें प्रतिभा है, लगन है, एकनिष्ठता है. तुम हिन्दू धर्म या वेद दोनों में से किसी एक को अपना जीवन अर्पित कर दो.'

मैक्समूलर ने वेद पढ़ने की जब इच्छा व्यक्त की तो गुरू ने दो हिदायतें दी- वेद का भाष्य करते समय तुम धुम्रपान नहीं करोगे. मूल और भाष्य का एक शब्द एक अक्षर भी नहीं छोड़ोगे. उन्होंने इन वचनों का दृढ़ता से पालन किया और अपने 27 वर्षो के कठोर श्रम से ऋग्वेद का उद्धार किया, जो ईष्ट इण्डिया कंपनी के संग्रहालय में कैद थे. हिन्दू धर्म के इस पवित्र ग्रन्थ के जीर्णोद्धार का श्रेय इन्हीं विद्वानों को जाता है, जिन्होंने अपने जीवन के लगभग पचास वर्ष भारतीय वांगमय में विचरते हुए बिताया.

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र मेंः कैलाश गौतम सम्मान, स्व.किशोरी लाल सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान

गद्य के क्षेत्र मेंः डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान, उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान, हिन्दी सेवी सम्मान

समाज सेवा के क्षेत्र मेंः समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-

अन्यः कलाश्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान, अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथिः 30 **दिसम्बर** 2020

अध्यक्ष, श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, प्रयागराज-211011, उ.प्र.,

मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

श्रद्धाजंलि

प्रसिद्ध समाजसेवी रामलुभया का हृदय गति रूकने से देहान्त हो गया. उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरूद्ध एक अथक यौद्धा की भांति लड़ाई लड़ी और गरीब, दलीत, पिछड़ो एवं महिलाओं के उत्थान के लिए बहुत कार्य किया था. उनके निधन पर समाज के सभी लोगों को भारी दुःख हुआ था.

क्षेत्र के सामाजिक संगठनों ने ऐसे महाने समाजसेवी को श्रद्धाजंलि देने के लिए एक शोकसभा का आयोजन किया था. शोकसभा में उपस्थित लोग दो मिनट के मौन धारण हेतु खड़े हो गये थे.

अभी उन्हें खड़े हुए पन्द्रह सेकन्ड भी नहीं हुए थे कि मंत्री जी का काफिला वहाँ आ पहुँचा. शोकसभा में एक स्वर गूंजा-''मंत्री जी आये है''.

बस इतना सुनते ही सभी शोकातुर लोग श्रद्धाजंलि को भूलकर मंत्री जी की अगवानी के लिए दरवाजे की तरफ लपक पड़े थे.

-रोहित यादव, सैदपुर, मंडी अटेली, हरियाणा

समझौता

अध्यापिका हूँ, हर रोज अलग-अलग बच्चों से वासता पड़ता है. कक्षा में जाना, पढ़ाना, बच्चों से बतियाना, उनकी नन्हीं-नन्हीं समस्याओं को सुलझाना मेरा शौक है. इस कक्षा में जाते मुझे करीब 6 माह हो गये थे. दो जुड़वाँ भाई-बहन को पढ़ाती हूँ. जहाँ बहन अति शान्त, कुशल व स्नेही वहीं भाई शरारती, बातूनी व कभी-कभी लापरवाह. उससे मेरी उम्मीदें कुछ ज्यादा ही बढ़ने लगी. हमेशा उसमें सुधार लाने की इच्छा ने मुझे उसके करीब ला दिया. परन्तु बात न मानना तो जैसे उसका संकल्प सा हो. वह अपनी मनमानी करता परन्तु पलटकर न तो कभी जवाब देता न ही सही काम करता. परीक्षा हुई. परिणाम भी मेरी आशा से कम था. उसकी कुशाग्र बुद्धि से ज्यादा उम्मीद की जा सकती थी. मैंने उसके माता-पिता को संदेश भिजवा कर मिलने का आग्रह किया. निश्चित समय पर उसके माता-पिता अपने बच्चों के साथ मेरे पास आए. पिता ने पूछा, 'मैम, आपने बुलाया था, क्या कोई समस्या है?' मैंने बच्चों की ओर देखा, दोनों के चेहरे पीले हो गये थे. मैंने कहा, 'इन्होंने क्या कहा?' पलटकर पिता ने कहा, 'ये क्या कहेंगे, रात को बताया कि कल रिजल्ट है और मैम ने आपको बुलाया है. मैडम मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ इससे पहले कि आपकी सुनू. मैंने 7 माह पहले शादी की है. ये बेटी मेरी पहली पत्नि की है, जो पिछले बरस गुजर गई और लड़का इनका है (अपनी पत्नि की ओर इशारा करते हुए) इसका पापा भी पिछले बरस गुजर गया. मेरी बहन ने यह रिश्ता सुझाया और हमने ब्याह कर लिया. जाने वाले तो चले गये, अब आगे की भी तो सोचनी है. हाँ, मैडम कहिए आप क्या बता रही थीं?'' मैं उनकी बातें सुनकर स्तब्ध थी. मैंने दोनों बच्चों की ओर देखा जो अभी भी वैसे ही सहमे से खड़े थे. मैंने कहा, ''बस यूं ही बुलाया आपको, आपके बच्चे नए हैं इस स्कूल में. पूछना था इन्हें कैसा लगा?'' वह बोले, ''शुक्रिया!'' देख सकती थी अब मैं उन दोनों अधूरे बच्चों के मुँह पर लौटती रौनक.

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र.

रिश्तों की जड़ें

प्रसून और सभ्या की शादी को चार साल हो चुके हैं लेकिन बार-बार आमंत्रित करने के बावजूद वे नमिता के यहाँ खाने पर नहीं जा पाए. प्रसून और सभ्या दोनों नौकरी करते हैं और दोनों की नौकरियाँ ही ऐसी हैं कि अत्यंत व्यस्त रहते हैं. ऐसा नहीं है कि वे नमिता के यहाँ जाना नहीं चाहते पर संयोग ही कुछ ऐसा होता है कि जब भी नमिता के यहाँ जाने का कार्यक्रम बनता है कुछ न कुछ व्यवधान उत्पन्न हो जाता है. पिछले दिनों जब नमिता एक शादी में सुरेखा से मिली तो शिकायत करते हुए उनसे कहा, 'सुरेखा दीदी हमसे क्या नाराज़गी है? प्रसून सभ्या को लेकर सारे दोस्तों और रिश्तेदारों के यहाँ हो आया है पर चार सालों में कुछ घंटों के लिए हमारे यहाँ आने की फ़ुर्सत नहीं मिली उसे.''

सुरेखा ने प्यार से कहा, ''नमिता तेरी शिकायत बिल्कुल वाजिब है. नाराज़ मत हो मैं इसी हफ़्ते प्रोग्राम बनवाती हूँ. घर आते ही सुरेखा ने प्रसून और सभ्या से कहा, ''मौसी तुमसे बहुत नाराज़ है. इस हफ़्ते हर हाल में मौसी के यहाँ हो आओ नहीं तो मैं उससे भी ज़्यादा नाराज़ हो जाऊँगी तुम दोनों से'' प्रसून और सभ्या दोनों ने आगामी रविवार को जाने का कार्यक्रम निश्चित कर लिया. सुरेखा को सचमुच

गुस्सा आ रहा था. वो मन ही मन कह रही थी कि आजकल न जाने नई पीढ़ी को क्या हो गया है रिश्तों की गरिमा ही नहीं समझते. फिर खुद ही कहा, ''पर प्रसून सभ्या को लेकर हर रिश्तेदार के यहाँ हो आया है सिवाय नमिता के. ये मात्र एक संयोग भी तो हो सकता है. नहीं संयोग नहीं कुछ न कुछ गड़बड़ है.'' सुरेखा मन ही मन न जाने कहाँ-कहाँ भटकती रही पर कोई सिरा उसके हाथ ही नहीं लग रहा था. तभी अचानक बीस-इक्कीस साल पुराने एक घटनाक्रम पर उसका ध्यान केंद्रित हो गया.

सभी लोग एक शादी में जा रहे थे. रास्ता लंबा था. कई घंटे का सफर. सभी लोग एक बस से जा रहे थे. बस के अतिरिक्त एक कार भी साथ-साथ चल रही थी. कार काफी बड़ी और आरामदायक थी. कार में दूल्हे के अतिरिक्ति नमिता, उसका पति और बेटा चिंटू भी बैठे. इसके बावजूद कार में कुछ जगह बाकी थी. सुरेखा ने प्रसून को भी इन लोगों के साथ बिठा दिया. सफर पर रवाना होने के बीस-पच्चीस मिनट बाद अचानक कार बस के आगे कच्ची सड़क पर उतर कर रुकी और कार में सवार लोगों ने बस को भी रुकने का इशारा किया. बस के रुकते ही कार का दरवाज़ा खुला और उसमें से एक बच्चा नीचे उतरा. बच्चे के नीचे उतरते ही कार ने स्पीड पकड़ ली. संभवतः बस का ड्राइवर बच्चे को नहीं देख पाया अतः उसने भी बस चला दी. बस कार के पीछे चलने को हुई तभी किसी ने बस को रुकवाया और कहा, 'अरे एक बच्चा उतरा है कार से. देखो किसका बच्चा है?'

'अरे ये तो सनी है सुरेखा का बेटा,' कई स्वर एक साथ उभरे. बस का दरवाज़ा खोलकर सनी को अंदर किया गया. सनी एकदम घबराया हुआ लग रहा था. सुरेखा ने सनी को गोदी में लिया ओर उससे पूछा, 'क्या हुआ सनी? कार में से बस में क्यों आ गया और इतना घबराया हुआ क्यों है?'

'चिंटू रो रहा था और लातें मार रहा था. कह रहा था सनी भैया को साथ नहीं बिठाना. सनी भैया को अभी कार से नीचे उतारो.' सनी ने बतलाया.

'फिर?'

'फिर मौसाजी ने कहा कि क्यों छोटी सी बात के लिए बच्चे को रुलाती हो? सनी को उतार दो. वो बस से आ जाएगा तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा?' सनी ने ये सब बतलाते हुए सुरेखा से पूछा, ''पर मम्मी अगर बस नहीं रुकती तो मैं क्या करता?''

लूट-खसोट

टूटे-फूटे पीतल-ताँबे और एल्युमीनियम के बदले गोला-मिम्री बेचने वाले ने गली में प्रवेश किया और ज़ोर से आवाज़ लगाई, ''टूटे-फूटे पीतल-ताँबे से गोलागिरी बदलवा लो.'' कुछ ही देर में टूटे-फूटे पीतल-ताँबे और एल्युमीनियम के बदले गोला-मिम्री बदलवाने वालों की भीड़ सी लग गई. कुछ ख़रीददार थे तो कुछ तमाशबीन भी थे. कोई पीतल का टूटा चम्मच हाथ में लिए था तो कोई काँसे की फूटी कटोरी. किसी के हाथ में ताँबे का कोई टुकड़ा था तो किसी के हाथ में एल्युमीनियम का पिचका हुआ कोई बेपहचान सा बर्तन. थोड़ी ही देर में जब भीड़ छँट गई तो एक बारह-तेरह साल का लड़का सावधानी से इधर-उधर देखता हुआ पीतल का एक बड़ा सा लोटा लिए हुए आया और गोलागिरी बेचने वाले से कहा, ''इसका गोला-मिम्री दे दे.'' लोटा पुराना या टूटा हुआ नहीं अपितु नया सा और मज़बूत लग रहा था. स्थिति स्पष्ट थी फिर भी गोलागिरी बेचने वाले ने पूछा,

''लोटा कहीं से चुराकर तो नहीं लाया है?''

''नहीं, अपने घर से लाया हूँ. ये कोई काम नहीं आता इसलिए माँ ने कहा कि इसका गोला-मिम्री ले ले.'', लड़के ने दृढ़तापूर्वक कहा. गोलागिरी बेचने वाले ने नज़रें इधर-उधर घुमाई और पूरी तरह से आश्वस्त हो जाने के बाद कि कोई नहीं देख रहा है सावधानी से लड़के के हाथ से लोटा लेकर अपने अब तक आए हुए स्क्रैप के नीचे रख लिया और अंदाज़े से लड़के को थोड़ी सी गोलागिरी और मिम्री पकड़ा दी. जब लड़के ने कहा कि बस इतनी सी ही तो उसने और थोड़ी सी गोलागिरी और मिम्री लड़के को थमा दी. लड़का गोलागिरी और मिम्री लेकर शीघ्रता से जिधर से आया था उससे दूसरी तरफ निकल गया.

लोटे का सौदा निपटाकर गोलागिरी बेचने वाला जैसे ही आगे बढ़ा मैंने पीछे से आवाज़ लगाई, ''अरे ओ गोलागिरी बेचने वाले! रुक ज़रा.'' गोलागिरी बेचने वाला रुक गया. मैंने उसके पास पहुँचकर उसे डाँटते हुए कहा, ''वो लोटा निकाल.'' उसने अनजान बनने की कोशिश करते हुए पूछा, ''कौन सा लोटा?'' मैंने कहा, ''वही लोटा जो अभी-अभी हमारा लड़का घर से चोरी से उठाके ला के तुझे दे गया है.

तुझे शर्म नहीं आती बच्चों को चोरी करना सिखाते और उनसे चोरी का माल ख़रीदते? और बीस रुपए के नए लोटे के बदले दो रुपल्ली का गोला-मिस्री पकड़ा दिया!'' मैंने एक-एक रुपए के दो सिक्के उसकी छाबड़ी पर फेंकते हुए कहा, ''निकाल जल्दी से लोटा नहीं तो अभी बुलाता हूँ आसपास के लोगों को. तेरी वो ठुकाई करेंगे भूल जाएगा बच्चों से चोरी करवाना.'' गोलागिरी बेचने वाले ने लोटा निकालकर फ़ौरन मेरे हवाले कर दिया और उसने वहाँ से चुपचाप खिसक जाने में ही ग़नीमत समझी.

यह घटना मेरे साथ नहीं बल्कि नंदकिशोर के साथ घटित हुई थी. इस घटना को सुनाने के बाद नंदकिशोर ने कहा, ''वो तो मैं अपने घर की खिड़की के पास खड़ा हुआ सब देख रहा था कि तभी पड़ोस में रहने वाला एक लड़का लोटा लेकर आया और उसके बदले में जो भी गोला-मिस्री मिला लेकर चला गया. यदि मैं वहाँ नहीं होता तो बीस रुपए का लोटा दो रुपए के गोला-मिस्री में. बीस रुपए के लोटे के बदले दो रुपल्ली का गोला-मिस्री. हद हो गई।. दुनिया में बेईमानी की कोई सीमा नहीं रही. जहाँ देखो वहीं लूट-खसोट मची है.'' एक सज्जन ने नंदकिशोर से पूछा, ''जब पड़ोसी को लोटा वापस किया होगा तो वो तो बड़ा खुश हुआ होगा? उसने अपने लड़के की भी ठुकाई की होगी?''

''लोटा पड़ौसी को क्यों देता? लोटे के बदले तो उसका लड़का गोला-मिस्री खा चुका था. मैंने तो अपनी अक़्ल लगाकर जेब से पैसे ख़र्च करके लोटा वापस लिया था गोलागिरी बेचनेवाले से'', नंदकिशोर ने अपनी अक़्ल की डींग मारते हुए बुलंद आवाज़ में कहा.

-सीताराम गुप्ता,
डी-१०६-सी, पीतम पुरा, दिल्ली-११००३४

1996 ls =ekfld ,oa 2001 ls ekfld d: :i esa fujUrj izdkf'kr

dy] vkt vkSj dy Hkh cgqi;kxh

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एक प्रति–15 / रुपये,
वार्षिक–150 / रुपये,
पंचवर्षीय–750 / रुपये,
आजीवन–1500 / रुपये, संरक्षकः 11000 / रुपये

[kkrk la[;k–66600200000154,
vkbZ,Q,l lh
dksM–बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011,
मो0: 9335155949, ई–मेलः
vsnehsamaj@rediffmail.com

कहानी

छुटकी

-अनुराग मिश्र 'गैर'
आबकारी निरीक्षक, बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश

14 जनवरी की सुबह के 7:30 बज रहे होंगे, सारा शहर कोहरे की घनी चादर में ढका था, हड्डियां जमा देने वाली सर्दी पड़ रही थी, परन्तु नवजीवन अल्ट्रासाउन्ड सेन्टर पर अच्छी खासी भीड़ थी. संयोग से आज मकरसक्रांति थी, और आज हमारी सृष्टि के केन्द्र सूर्य उत्तरायण हो रहे थे, आज से उत्तरी गोलार्ध के सुसुप्त जीवन में गर्मी का संचार बढ़ने वाला था. लेकिन इस सबसे अलग मिसेज पाण्डेय के गर्भ में पल रही सवा तीन माह की छुटकी की जान हलक में अटकी हुई थी. वह सोच रही थी कि आज के अल्ट्रासाउन्ड में जब उसके मां-बाप को उसके लड़की होने का पता चलेगा तो पता नहीं वो क्या निर्णय लेगे? अबार्सन कराकर उसे नष्ट कर देंगे या आयरन, कैल्सियम व प्रोटीन से भरपूर आहार लेकर नौ माह बाद एक गोल-मटोल गुडिया के रूप में उस जन्म देंगे.

अल्ट्रासाउन्ड सेन्टर पर अच्छी खासी भीड़ थी. छुटकी यह सोच रही थी कि आज जब उसके मां-बाप को उसके लड़की होने का पता चलेगा तो पता नहीं क्या निर्णय लेगे? अबार्सन कराकर उसे नष्ट कर देंगे या प्रोटीन से भरपूर आहार लेकर उसे जन्म देंगे.

जब उसके पापा ने मम्मी का नम्बर लगाया तो कम्पाउन्डर ने 13 वां नम्बर बताया, 13 नम्बर सुनते ही छुटकी का कलेजा फिर धक-धक करने लगा, बड़ी अशुभ संख्या होती है 13, छुटकी की रूह कांप गय. छुटकी इसी सब सोच में डूबी थी कि अचानक डाक्टर साहब आ गयी, सारे मरीज सतर्क हो गये, छुटकी तो एकदम सिहर गयी. डाक्टर के आते ही कम्पाउन्डर मरीजों के पर्चे जमा करने लगा, कम संख्या 10 व 12 के मरीज तब तक नहीं आये थे, छुटकी घबरा गयी कि अरे अब तो उसकी मम्मी का नम्बर जल्दी आ जायेगा. तभी एक स्कूटर पर १०वीं नम्बर वाली आन्टी आ गयीं. इस बीच डाक्टर ने अल्ट्रासाउन्ड शुरू कर दिया तथा एक-एक कर आठ मरीज निपट गये, जैसे-जैसे 13वां नम्बर नजदीक आ रहा था, वैसे-वैसे छुटकी की घबराहट बढत्र रही थी, जब 11वें नम्बर की आन्टी अन्दर गयीं तो छुटकी का दिल एकदम धक-धक करने लगा, तभी एक कार आयी और एक आन्टी उतर कर आयीं और कम्पाउन्डर से पूछीं कि 12वां नम्बर आ गया क्या? 12वें नम्बर की आटी को देखते ही छुटकी ने राहत की सांस ली और सोचने लगी कि चलो अब उसकी मम्मी का नम्बर कुछ और देर बाद आयेगा. वह इसी सोच में डूबी रही और 11 व 12 नम्बर की आन्टी का अल्ट्रासाउन्ड हो गया उसे पता नहीं चला.

कम्पाउन्डर ने जब 13 नम्बर मिसेज पाण्डेय बुलाया तब वो हाश में आयी. मां के पेट में वह इधर-उधर भागने लगी उसका मन कर रहा था कि वह मां के बच्चे की ट्यूब से निकल भागे और दिल में छिप जाये, परन्तु ऐसा सम्भव नहीं था क्योकि ईश्वर ने पेट को दिल से जोड़ने का कोई रास्ता नहीं बनाया था, मन मारकर वह दुबक कर बैठ गयी डाक्टर अल्ट्रासाउन्ड कर रहीं थीं और छुटकी को सरकार के ऊपर गुस्सा आ रहा था, कहने को तो इस देश में लिंग परीक्षण पर कानूनी रोक है, परन्तु चोरी-छिपे, ले देकर डाक्टर भगवान का भेद खोल ही देते हैं वह सोचने लगी कि अगर यह भ्रष्टाचार नहीं होता तो वह बड़े आराम से दुनियां में आ जात. वह सोचने लगी कि अगर वह राज्य की स्वास्थ्य महानिदेशक होती तो सारे अल्ट्रासाउन्ड केन्द्रों की नकेल टाइट रखती, क्या मजाल कि कोई डाक्टर गर्भस्थ शिशु का लिंग बता देता.

इस बीच डाक्टर ने परीक्षण पूरा कर लिया और उसके मम्मी पापा को बताया कि वह लड़की है. यह सुनकर इसकी मम्मी व पापा का चेहरा उतर गया, मम्मी का शरीर तो ठण्डा पड़ रहा था, किसी तरह उसके पापा ने मम्मी को संभाला और घर ले गये, घर पहुंच कर उसकी मम्मी बहुत रोई नाश्ता-खाना भी नहीं बना उसकी दो बड़ी बहने गीता व मीता सोचने लगी कि अगर भगवान ने उसे आज लड़का बनाया होता तो उसकी मम्मी पापा अस्पताल से सीधे मन्दिर गये होते, भगवान को प्रसाद चढ़ाये होते, घर में आज बेमौसम ही दीवाली सा उल्लास होता. शाम को किसी अच्छे होटल में मम्मी पापा से ट्रीट लेकर ही मानती,

पर हाय री किस्मत भगवान ने उसे लड़की बना दिया वो भी तब जब परिवार में पहले से ही दो बड़ी बहने थीं.

छुटकी की मम्मी दिन भर बिस्तर पर ही पड़ी रहीं, एकान्त होने पर कई बार रोई भी, महरी ने पूछा भी कि 'का भवा मेम सहाब' पर उन्होंने कुछ नहीं बताया, बस सिर दर्द का सदियों पुराना बहाना बना दिया. शाम तक छुटकी की मम्मी एकदम निढ़ाल हो गयी थीं, छुटकी का मन भी बहुत दुखी रहा. पापा जब आफिस से आये तो मम्मी ने किस तरह चाय बनायी और रात में तो खिचड़ी ही बनी. खाने के बाद जब सब लेट गये तो पापा ने मम्मी को बहुत समझाया लक्ष्मीबाई, इन्दिरा गांधी, कल्पना चावला, किरन वेदी, सुनीता बिलियम्स व सूबे की मुख्यमंत्री बहन मायावती तक का उदाहरण दिया समझाया कि लड़कियां भी लड़को के बराबर हैं, लड़को से आगे भी निकल रही हैं, बहू-बेटो से ज्यादा ध्यान बेटी-दामाद रख रहे है, परन्तु छुटकी की मम्मी तो अबार्सन पर ही अड़ी रही, कहने लगी कहां से करोगे तीन-तीन लड़कियों की शादी. दो जो पहले से है, उन्हीं के दान-दहेज में कपड़े उतर जायेगें. छुटकी देख रही थी कि मम्मी के तर्कों के आगे पापा निरूत्तर हो जाते.

अन्त में पापा ने मम्मी से कहा अच्छा एक दिन और सोच लो. छुटकी बहुत खुश हुई, शायद उसकी जान बच जाये, परन्तु उसकी वह खुशी एक ही दिन की थी, अगले दिन बेडरूम रूपी कोपभवन में मम्मी के आगे पापा हार गये, तय हुआ कि कल गीता-मीता के स्कूल जाने के बाद, मम्मी पापा हास्पिटल जाकर अबार्सन करा देंगे. छुटकी को उस रात नींद नहीं आई, भगवान को मनाती रही कि उसकी मम्मी का मन रात में बदल जाये, परन्तु उसकी मम्मी तो पत्थर की बनी थी.

अगले दिन सुबह गीता-मीता के स्कूल जाने के बाद छुटकी की मम्मी व पापा अल्ट्रासाउन्ड सेन्टर पहुंचकर डॉक्टर से मिले व उसकी मम्मी अबार्सन कराने हेतु भर्ती हो गई. थोड़ी सी औपचारिकताओं के बाद डाक्टर मम्मी ने जब अबार्सन की सूई लगाई तो छुटकी को लगा कि उसके शरीर में हजारों सुईयां चुभ रही है, उसका गला सूखने लगा. लग रहा था कि जैसे उसका शरीर से अलग हो चुकी थी, उसका क्षत-विक्षत भ्रूण मां के जिस्म से बाहर आ चुका था. छुटकी की आत्मा अब कमरे के एक कोने में बैठी हांफ रही थी, अपने मृत शरीर को देखकर उसकी आंखों से झर-झर आंसू झरने लगा, कुछ देर में उसका शरीर डसटविन में डाल दिया गया, फिर कुछ ही देर बाद एक दाई उसके मृत भ्रूण को पास के नाले में डाल आई.

छुटकी ने यमराज से विनती कि वह उसकी आत्मा को मगरमच्छ में डाल दे और मगरमच्छ की आत्मा को लेकर वापस चले जायें, परन्तु यमराज ने अपनी असमर्थता जताई. उसने अंतिम बार मगरमच्छ का चेहरा देखा, जाने क्यूँ मगरमच्छ की सूरत, उसकी मां की सूरत से बहुत मिल रही थी.

छुटकी की आत्मा उड़कर वहीं एक पेड़ की डाल पर बैठ कर अपने भ्रूण को निहारने लगी. उसका मन नहीं हुआ कि वह जाकर अपनी मां का चेहरा निहार ले. तभी नाले में एक जोर का बहाव आया और छुटकी का भ्रूण तैरते हुए आगे बढ़ने लगा, छुटकी की आत्मा भी ऊपर-ऊपर उड़ने लगी, कुछ देर तक गंदगी भरे नाले में बहने के बाद छुटकी का भ्रूण नदी में जा पहुंचा, छुटकी की आत्मा किनारे के पेड़ पर फिर जा बैठी, और अपने शरीर को निहारने लगी, तभी कहीं से एक मगरमच्छ आया, और उसने छुटकी के शरीर को गटक लिया, छुटकी की आत्मा सिहर उठी, जब तक छुटकी की अपने आपको सभालती तब तक भैंस पर सवार यमराज आ पहुंचे, और उसे भगवान के पास ले जाने लगे, छुटकी ने यमराज से बहुत हाथ-पैर जोड़े कि उसे कुछ दिन पृथ्वी पर ही रहने दिया जाए, परन्तु यमराज ने नहीं सुना. छुटकी की आत्मा ने पुनः यमराज से कहा कि वह उसकी आत्मा को मगरमच्छ में डाल दे और मगरमच्छ की आत्मा को लेकर वापस चले जायें, परन्तु यमराज ने अपनी असमर्थता जताई और कहा कि देवलोक में पृथ्वी की तरह अत्याचार नही है. वहां पर भगवान के निर्णय में हस्तक्षेप नहीं किया जाता. हार कर छुटकी यमराज के साथ जाने के लिए तैयार हो गई. उसने अंतिम बार मगरमच्छ का चेहरा देखा, जाने क्यूँ मगरमच्छ की सूरत, उसकी मां की सूरत से बहुत मिल रही थी.

इतनी अच्छी पोस्ट जरूर पढियेगा

'बेटा! थोड़ा खाना खाकर जा..! दो दिन से तुने कुछ खाया नहीं है.' लाचार माता के शब्द है अपने बेटे को समझाने के लिये.

'देख मम्मी! मैंने मेरी बारहवीं बोर्ड की परीक्षा के बाद वेकेशन में सेकेंड हैंड बाइक मांगी थी, और पापा ने प्रोमिस किया था. आज मेरे आखरी पेपर के बाद दीदी को कह देना कि जैसे ही मैं परीक्षा खंड से बाहर आऊंगा तब पैसा लेकर बाहर खडी रहे. मेरे दोस्त की पुरानी बाइक आज ही मुझे लेनी है. और हाँ, यदि दीदी वहाँ पैसे लेकर नहीं आयी तो मैं घर वापस नहीं आऊंगा.'

एक गरीब घर में बेटे मोहन की जिद्द और माता की लाचारी आमने सामने टकरा रही थी.

'बेटा! तेरे पापा तुझे बाइक लेकर देने ही वाले थे, लेकिन पिछले महीने हुए एक्सिडेंट....

मम्मी कुछ बोले उसके पहले मोहन बोला 'मैं कुछ नहीं जानता..मुझे तो बाइक चाहिये ही चाहिये...!'

ऐसा बोलकर मोहन अपनी मम्मी को गरीबी एवं लाचारी की मझधार में छोड़ कर घर से बाहर निकल गया.

12वीं बोर्ड की परीक्षा के बाद भागवत सर एक अनोखी परीक्षा का आयोजन करते थे.

हालांकि भागवत सर का विषय गणित था, किन्तु विद्यार्थियों को जीवन का भी गणित भी समझाते थे और उनके सभी विद्यार्थी विविधता से भरे ये परीक्षा अचूक देने जाते थे.

इस साल परीक्षा का विषय था 'मेरी पारिवारिक भूमिका'

मोहन परीक्षा खंड में आकर बैठ गया. उसने मन में गांठ बांध ली थी कि यदि मुझे बाइक लेकर देंगे तो मैं घर नहीं जाऊंगा.

भागवत सर के क्लास में सभी को पेपर वितरित हो गया. पेपर में 10 प्रश्न थे. उत्तर देने के लिये एक घंटे का समय दिया गया था.

मोहन ने पहला प्रश्न पढा और जवाब लिखने की शुरुआत की.

प्रश्न नं० 1- आपके घर में आपके पिताजी, माताजी, बहन, भाई और आप कितने घंटे काम करते है? सविस्तार बताइये?

मोहन ने त्वरा से जवाब लिखना शुरू कर दिया. 'पापा सुबह छह बजे टिफिन के साथ अपनी ओटोरिक्शा लेकर निकल जाते है और रात को नौ बजे वापस आते हैं. कभी कभार वर्धी में जाना पड़ता है. ऐसे में लगभग पंद्रह घंटे. मम्मी सुबह चार बजे उठकर पापा का टिफिन तैयार कर, बाद में घर का सारा काम करती हैं. दोपहर को सिलाई का काम करती है और सभी लोगों के सो जाने के बाद वह सोती हैं. लगभग रोज के सोलह घंटे. दीदी सुबह कालेज जाती हैं, शाम को 4 से 8 पार्ट टाइम जॉब करती हैं और रात्रि को मम्मी को काम में मदद करती हैं. लगभग बारह से तेरह घंटे.

मैं, सुबह छह बजे उठता हूँ, और दोपहर स्कूल से आकर खाना खाकर सो जाता हूँ. शाम को अपने दोस्तों के साथ टहलता हूँ. रात्रि को ग्यारह बजे तक पढता हूँ. लगभग दस घंटे.

(इससे मोहन को मन ही मन लगा, कि उनका कामकाज में औसत सबसे कम है.)

पहले सवाल के जवाब के बाद मोहन ने दूसरा प्रश्न पढाः **'प्रश्न नं०२- आपके घर की मासिक कुल आमदनी कितनी है?'**

जवाबः पापा की आमदनी लगभग दस हजार हैं. मम्मी एवं दीदी मिलकर पांच हजार जोड़ते हैं. कुल आमदनी पंद्रह हजार.

प्रश्न नं०3- मोबाइल रिचार्ज प्लान, आपकी मनपसंद टीवी पर आ रही तीन सीरियल के नाम, शहर के एक सिनेमा हाल का पता और अभी वहां चल रही मूवी का नाम बताइये?'

सभी प्रश्नों के जवाब आसान होने से फटाफट दो मिनट में लिख दिये.

प्रश्न नं० 4-एक किलो आलू और भिन्डी के अभी हाल की कीमत क्या है? एक किलो गेहूं, चावल और तेल की कीमत बताइये? और जहाँ पर घर का गेहूं पिसाने जाते हो उस आटा चक्की का पता दीजिये.'

मोहनभाई को इस सवाल का जवाब नहीं आया. उसे समझ में आया कि हमारी दैनिक आवश्यक जरुरतों की चीजों के बारे में तो उसे लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है. मम्मी जब भी कोई काम बताती थी तो मना कर देता था. आज उसे ज्ञान हुआ कि अनावश्यक चीजें मोबाइल रिचार्ज, मुवी का ज्ञान इतना उपयोगी नहीं है. अपने घर के काम की जवाबदेही लेने से या तो हाथ बटोर कर साथ देने से हम कतराते रहे हैं.

प्रश्न नं०5-आप अपने घर में भोजन को लेकर कभी तकरार या गुस्सा करते हो?'

जवाबः हां, मुझे आलू के सिवा कोई भी सब्जी पसंद नहीं है. यदि मम्मी और कोई सब्जी बनायें तो, मेरे घर में झगड़ा होता है. कभी मैं बगैर खाना खायें उठ खडा हो जाता हूँ. (इतना लिखते ही मोहन को याद आया कि आलू की सब्जी से मम्मी को गैस की तकलीफ होती हैं. पेट में दर्द होता है, अपनी सब्जी में एक बड़ी चम्मच वो अजवाइन डालकर खाती हैं. एक दिन मैंने गलती से मम्मी की सब्जी खा ली, और फिर मैंने थूक दिया था और फिर पूछा कि मम्मी तुम ऐसा क्यों खाती हो? तब दीदी ने बताया था कि हमारे घर की स्थिति ऐसी अच्छी नहीं है कि हम दो सब्जी बनाकर खायें. तुम्हारी जिद के कारण मम्मी बेचारी क्या करें?)

मोहन ने अपनी यादों से बाहर आकर अगले प्रश्न को पढा. **प्रश्न नं० 6- आपने अपने घर में की हुई आखरी जिद के बारे में लिखिये'** मोहन ने जवाब लिखना शुरू किया. मेरी बोर्ड की परीक्षा पूर्ण होने के बाद दूसरे ही दिन बाइक के लिये जीद्द की थी. पापा ने कोई जवाब नहीं दिया था, मम्मी ने समझाया कि घर में पैसे नहीं है. लेकिन मैं नहीं माना! मैंने दो दिन से घर में खाना खाना भी छोड़ दिया है. जबतक बाइक नहीं लेकर दोगे मैं खाना नहीं खाऊंगा और आज तो मैं वापस घर नहीं जाऊंगा कहके निकला हूँ. अपनी जिद का प्रामाणिकता से मोहन ने जवाब लिखा.

प्रश्न नं० 7- आपको अपने घर से मिल रही पोकेट मनी का आप क्या करते हो? आपके भाई-बहन कैसे खर्च करते हैं?'

जवाब : हर महीने पापा मुझे सौ रुपये देते हैं. उसमें से मैं, मनपसंद पर्फ्यूम, गोगल्स लेता हूं, या अपने दोस्तों की छोटीमोटी पार्टियों में खर्च करता हूँ. मेरी दीदी को भी पापा सौ रुपये देते हैं. वो खुद कमाती हैं और पगार के पैसे से मम्मी को आर्थिक मदद करती हैं. हां, उसको दिये गये पोकेटमनी को वो गल्ले में डालकर बचत करती हैं. उसे कोई मौज शौख नहीं है, क्योंकि वो कंजूस भी हैं.

प्रश्न नं० 8-आप अपनी खुद की पारिवारिक भूमिका को समझते हो?'

प्रश्न अटपटा और जटिल होने के बाद भी मोहन ने जवाब लिखा. परिवार के साथ जुड़े रहना, एकदूसरे के प्रति समझदारी से व्यवहार करना एवं मददरूप होना चाहिये और ऐसे अपनी जवाबदेही निभानी चाहिये. यह लिखते लिखते ही अंतरात्मा से आवाज आयी कि अरे मोहन! तुम खुद अपनी पारिवारिक भूमिका को योग्य रूप से निभा रहे हो? और अंतरात्मा से जवाब आया कि ना बिल्कुल नहीं!

प्रश्न नं० 9-आपके परिणाम से आपके माता-पिता खुश हैं? क्या वह अच्छे परिणाम के लिये आपसे जिद करते हैं? आपको डांटते रहते हैं?'

(इस प्रश्न का जवाब लिखने से पहले हुए मोहन की आंखें भर आयी. अब वह परिवार के प्रति अपनी भूमिका बराबर समझ चुका था.) लिखने की शुरुआत की. वैसे तो मैं कभी भी मेरे माता-पिता को आजतक संतोषजनक परिणाम नहीं दे पाया हूँ. लेकिन इसके लिये उन्होंने कभी भी जिद नहीं की है. मैंने बहुत बार अच्छे रिजल्ट के प्रोमिस तोड़े हैं. फिर भी हल्की सी डांट के बाद वही प्रेम और वात्सल्य बना रहता था.

प्रश्न नं०10-पारिवारिक जीवन में असरकारक भूमिका निभाने के लिये इस वेकेशन में आप कैसे परिवार को मदद करेंगे?

जवाब में मोहन की कलम चले इससे पहले उनकी आंखों से आंसू बहने लगे, और जवाब लिखने से पहले ही कलम रुक गई. बेंच के नीचे मुंह रखकर रोने लगा. फिर से कलम उठायी तब भी वो कुछ भी न लिख पाया. अनुत्तर दसवां प्रश्न छोड़कर पेपर सबमिट कर दिया.

स्कूल के दरवाजे पर दीदी को देखकर उसकी ओर दौड़ पड़ा.

'भैया! ये ले आठ हजार रुपये, मम्मी ने कहा है कि बाइक लेकर ही घर आना.' दीदी ने मोहन के सामने पैसे धर दिये.

'कहाँ से लायी ये पैसे?' मोहन ने पूछा. दीदी ने बताया- 'मैंने मेरी ऑफिस से एक महीने की सेलेरी एडवांस मांग ली. मम्मी भी जहां काम करती हैं वहीं से उधार ले लिया, और मेरी पोकेटमनी की बचत से निकाल लिये. ऐसा करके तुम्हारी बाइक के पैसे की व्यवस्था हो गई हैं.'

मोहन की दृष्टि पैसे पर स्थिर हो गई. दीदी फिर बोली 'भाई, तुम मम्मी को बोलकर निकले थे कि पैसे नहीं दोगे तो, मैं घर पर नहीं आऊंगा! अब तुम्हें समझना चाहिये कि तुम्हारी भी घर के प्रति जिम्मेदारी है. मुझे भी बहुत से शौक हैं, लेकिन अपने शौख से अपने परिवार को मैं सबसे ज्यादा महत्व देती हूं. तुम हमारे परिवार के सबसे लाडले हो, पापा को पैर की तकलीफ हैं फिर भी तेरी बाइक के लिये पैसे कमाने और तुम्हें दिये प्रोमिस को पूरा करने

अपने फ्रेक्चर वाले पैर होने के बावजूद काम किये जा रहे हैं. तेरी बाइक के लिये. यदि तुम समझ सको तो अच्छा है, कल रात को अपने प्रोमिस को पूरा नहीं कर सकने के कारण बहुत दुःखी थे और इसके पीछे उनकी मजबूरी है. बाकी तुमने तो अनेकों बार अपने प्रोमिस तोड़े ही है न?

मेरे हाथ में पैसे थमाकर दीदी घर की ओर चल निकली.

उसी समय उसका दोस्त वहां अपनी बाइक लेकर आ गया, अच्छे से चमका कर ले आया था.

'ले..मोहन आज से ये बाइक तुम्हारी, सब बारह हजार में मांग रहे हैं, मगर ये तुम्हारे लिये आठ हजार.'

मोहन बाइक की ओर टकर टकर देख रहा था और थोड़ी देर के बाद बोला-'दोस्त तुम अपनी बाइक उस बारह हजार वाले को ही दे देना! मेरे पास पैसे की व्यवस्था नहीं हो पायी हैं और होने की हाल संभावना भी नहीं है.'

और वो सीधा भागवत सर की केबिन में जा पहूंचा.

'अरे मोहन! कैसा लिखा है पेपर में? भागवत सर ने मोहन की ओर देख कर पूछा.

'सर!, यह कोई पेपर नहीं था, ये तो मेरे जीवन के लिये दिशा निर्देश था. मैंने एक प्रश्न का जवाब छोड़ दिया है. किन्तु ये जवाब लिखकर नहीं अपने जीवन की जवाबदेही निभाकर दूंगा और भागवत सर को चरणस्पर्श कर अपने घर की ओर निकल पड़ा. घर पहुंचते ही, मम्मी पापा दीदी सब उसकी राह देखकर खड़े थे.

'बेटा! बाइक कहाँ हैं?' मम्मी ने पूछा. मोहन ने दीदी के हाथों में पैसे थमा दिये और कहा कि सॉरी! मुझे बाइक नहीं चाहिये. और पापा मुझे ऑटो की चाभी दो, आज से मैं पूरे वेकेशन तक ऑटो चलाऊंगा और आप थोड़े दिन आराम करेंगे, और मम्मी आज मैं मेरी पहली कमाई शुरू होग. इसलिये तुम अपनी पसंद की मैथी की भाजी और बैगन ले आना, रात को हम सब साथ मिलकर के खाना खायेंगे.

मोहन के स्वभाव में आये परिवर्तन को देखकर मम्मी उसको गले लगा लिया और कहा कि 'बेटा! सुबह जो कहकर तुम गये थे वो बात मैंने तुम्हारे पापा को बतायी थी, और इसलिये वो दुःखी हो गये, काम छोड़ कर वापस घर आ गये. भले ही मुझे पेट में दर्द होता हो लेकिन आज तो मैं तेरी पसंद की ही सब्जी बनाऊंगी.'

मोहन ने कहा-'नहीं मम्मी! अब मेरी समझ गया हूँ कि मेरे घर परिवार में मेरी भूमिका क्या है? मैं रात को बैंगन मैथी की सब्जी ही खाऊंगा, परीक्षा में मैंने आखरी जवाब नहीं लिखा हैं, वह प्रेक्टिकल करके ही दिखाना है और हाँ मम्मी हम गेहूं को पिसाने कहां जाते हैं, उस आटा चक्की का नाम और पता भी मुझे दे दो' और उसी समय भागवत सर ने घर में प्रवेश किया. और बोले 'वाह! मोहन जो जवाब तुमनें लिखकर नहीं दिये वे प्रेक्टिकल जीवन जीकर कर दोगे.'

'सर! आप और यहाँ?' मोहन भागवत सर को देख कर आश्चर्य चकित हो गया.

'मुझे मिलकर तुम चले गये, उसके बाद मैंने तुम्हारा पेपर पढ़ा इसलिये तुम्हारे घर की ओर निकल पड़ा. मैं बहुत देर से तुम्हारे अंदर आये परिवर्तन को सुन रहा था. मेरी अनोखी परीक्षा सफल रही और इस परीक्षा में तुमने पहला नंबर पाया है.'

ऐसा बोलकर भागवत सर ने मोहन के सर पर हाथ रखा. मोहन ने तुरंत ही भागवत सर के पैर छुएँ और आटो रिक्शा चलाने के लिये निकल पड़ा..

मेरा सभी सम्माननीय अभिभावकों से आग्रह है कि आप इस पोस्ट को आप भी जरूर पढ़िएगा और अपने बच्चों को भी पढ़ने का अवसर दें. प्रैक्टिकल जीवन में तो मैंने अनुभव किया है लेकिन सभी लोगों को किस प्रकार से अनुभव कराया जाए इसके लिए मेरा आपसे आग्रह है कि आप स्वयं और अपने बच्चों को इस पोस्ट को जरूर करने का अवसर प्रदान करें.

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

हिंदी साहित्य का उद्भव काल

30 अक्टूबर, लखनऊ. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की नवगठित लखनऊ इकाई द्वारा 'हिंदी साहित्य के उद्भव काल व हिंदी भाषा के प्रारंभिक इतिहास' पर एक ऑन लाईन विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने की. विचार गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में महाराष्ट्र से श्रीमती पूर्णिमा उमेश झेंडे, विभागाध्यक्ष-हिन्दी थी. गोष्ठी के समीक्षक राष्ट्रपति एवं राज्यपाल से शिक्षक सम्मान प्राप्त श्री ओमप्रकाश त्रिपाठी रहे. लखनऊ के वरिष्ठ साहित्यकार श्री नरेन्द्र भूषण जी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही. संस्थान के सचिव डॉ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के मार्गदर्शन में आयोजित इस गोष्ठी में विभिन्न प्रदेशों से 10 चयनित साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास पर अपने विचार दृष्टिकोण रखे. छत्तीसगढ़ के शोधार्थी श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव जी का एक लघु शोध भी गोष्ठी में चर्चा में रहा. सभी ने हिन्दी साहित्य के कालखंड विभाजन पर अनेक रचनाकारों के मत पर विस्तार से चर्चा की.

गोष्ठी में लखनऊ की सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सीमा वर्मा, लखनऊ की ही साहित्यकार डॉ. अर्चना वर्मा, रायबरेली संस्थान की हिंदी सांसद श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', प्रयागराज से प्राचार्या एवं सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. पूर्णिमा मालवीय, लखनऊ से ही डॉ. तारिका सिंह, डॉ. कुमुद श्रीवास्त, दुर्ग, छत्तीसगढ़ के शोधार्थी श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव, प्रयागराज से संस्थान के हिंदी सांसद श्री प्रभांषु कुमार, मध्य प्रदेश से आशीष पाण्डेय जिद्दी, श्री नरेन्द्र भूषण-लखनऊ ने अपने विचार रखे.

गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने सभी के विचारों को ध्यान से सुनकर अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा 'आज जब हिन्दी जगत कहानी, उपन्यास व समकालीन कविता में उलझा हुआ है ऐसे में आदिकाल विषय पर गोष्ठी कराना तथा सबकी सक्रिय भागीदारी होना बहुत ही साहसिक कार्य है.'

गोष्ठी के समीक्षक डॉ. ओमप्रकाश त्रिपाठी जी ने भी इसे बहुत ही श्रेष्ठ कार्य बताया तथा सभी प्रस्तुतियों की प्रशंसा करते हुए अपने विचार रखे. गोष्ठी में डॉ. अर्चना वर्मा जी की सुमधुर वन्दना बहुत ही प्रशंसनीय रही. गोष्ठी में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सीमा वर्मा ने ज्ञापित किया.

सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण के लिए डा. कलाम ने व्यापक संकल्पना दी : प्रो. शर्मा

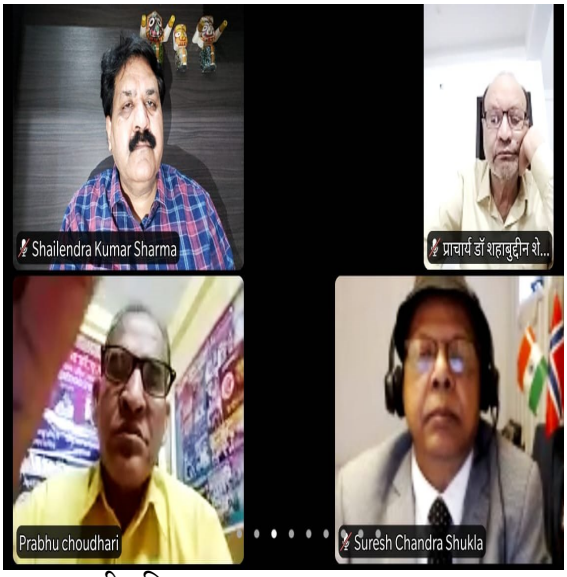

राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा भारत रत्न एपीजे अब्दुल कलामः शक्ति संपन्न और आत्मनिर्भर भारत के परिप्रेक्ष्य में पर केंद्रित अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संगोष्ठी के प्रमुख अतिथि वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार और अनुवादक श्री शरद चंद्र शुक्ल शरद आलोक, ओस्लो, नार्वे थे. मुख्य वक्ता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के हिंदी विभागाध्यक्ष एवं कुलानुशासक प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा थे. अध्यक्षता शिक्षाविद डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे ने की. विशिष्ट अतिथि साहित्यकार डा. अर्चना झा-हैदराबाद, डॉ० मंजू रूस्तगी-चेन्नई एवं संस्था के महासचिव डा. प्रभु चौधरी ने विचार व्यक्त किए. प्रमुख अतिथि श्री शरद चंद्र शुक्ल ने कहा कि भारत रत्न डा. एपीजे अब्दुल कलाम आदर्श जीवन जीने वाले महान व्यक्तित्व के धनी थे. उन्होंने शिक्षकीय कर्म को सर्वोपरि महत्व दिया है.

मुख्य वक्ता प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि आत्मनिर्भर और शक्ति संपन्न राष्ट्र के निर्माण के लिए डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम ने व्यापक संकल्पना दी थी. वे दूरद्रष्टा वैज्ञानिक और विचारक थे. उनकी दृष्टि में यदि हम विकास चाहते हैं तो देश में शांति की स्थिति होना आवश्यक है और शांति की स्थापना शक्ति से होती है. वे विज्ञान को मानवता के लिए एक खूबसूरत उपहार मानते थे, इसलिए हमें इसे विकृत नहीं करना चाहिए. उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन अत्यंत सादगी और सहजता के साथ जिया. वे सर्वस्वीकार्य राष्ट्रपति के रूप में सम्मानित हुए. वे करोड़ों लोगों के देश के रूप में सोचने की बात करते हैं. उनकी दृष्टि अत्यंत मानवीय संवेदनाओं पर आधारित थी. उन्होंने समाज के वंचित और पीड़ित वर्ग के लोगों की चिंता की. आम आदमी भी तकनीक का लाभ ले, इस दिशा में वे प्रयत्नशील बने रहे. डॉ० शहाबुद्दीन नियाज शेख ने कहा कि डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की दृष्टि में यदि हमें आत्मविश्वास के साथ जीना है तो आत्मनिर्भर बनना होगा. उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन शिक्षा, अनुसंधान और राष्ट्र की सेवा में अर्पित किया. डॉ० कलाम के जयंती का अवसर वाचन प्रेरणा दिवस और विद्यार्थी दिवस के रूप में बड़े पैमाने पर मनाया जाता है. कलाम साहब बेहद संवेदनशील थे. उन्हें बच्चों से बातचीत और रुद्रवीणा वादन पसन्द था. उनकी दृष्टि में सपने वे सच्चे होते हैं जो हमें नींद नहीं आने देते हैं. उन्होंने भारतीयों के जनमानस में आत्म गौरव का भाव जगाया था. ग्रंथों के पठन पाठन का संदेश उन्होंने दिया, जिसकी प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है. संस्था के अध्यक्ष श्री ब्रजकिशोर शर्मा ने संगोष्ठी की प्रस्तावना प्रस्तुत की. आयोजन में डॉ० अब्दुल कलाम के व्यक्तित्व और योगदान पर विभिन्न वक्ताओं ने प्रकाश डाला. इनमें डॉ० अर्चना झा-हैदराबाद, डॉ० मंजू रुस्तगी-चेन्नई, डॉ० निसार फारूकी-उज्जैन, डॉ० अनीता मांदिलबार-रायपुर, श्रीमती श्वेता गुप्ता-कोलकाता, डॉ० वंदना तिवारी-मुम्बई, डॉ०प्रवीण बाला-पटियाला, डॉ० भरत शेणकर, सुश्री सीमा निगम-रायपुर, सुश्री सुनीता चौहान-मुम्बई, डॉ० मुक्ता कौशिक आदि प्रमुख थे.

स्वागत भाषण डॉ० लता जोशी और अतिथि परिचय डा. आशीष नायक रायपुर ने दिया.

कार्यक्रम में श्रीमती सुवर्णा जाधव, डा. मधुकर देशमुख, डा अमित शर्मा, डा. वीरेंद्र मिश्रा, अशोक भागवत, पूर्णिमा कौशिक, डा. शैल चंद्रा, राम शर्मा, डा. रश्मि चौबे, डा. मुक्ता कौशिक आदि सहित अनेक प्रबुद्धजन उपस्थित थे.

संचालन संस्था की महिला इकाई की महासचिव डा. रश्मि चौबे ने किया. अंत में आभार श्री अनिल ओझा ने प्रकट किया.

स्वास्थ्य सूत्र

विश्व का कोई व्यक्ति नही है, जो रोगी बनकर जीना चाहता हो. स्वास्थ्य प्राप्त होता है निम्न सूत्रों के अनुपालन से. अतः हर व्यक्ति सतत् निम्न स्वास्थ्य सूत्रों के पालन करके स्वस्थ रहे:

■ प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व सोकर उठे. रात में अधिक देर तक जागरण न करें.

■ प्रतिदिन नियमित रूप से व्यायाम करें. सप्ताह में कम से कम एक बार पूरे शरीर की मालिश करें.

■सुबह-शाम टहलना लाभदायक है. नियमित रूप से टहलने से संपूर्ण शरीर की मांसपेशियां सक्रिय हो जाती है रक्तसंचार बढ़ता है, शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है, धमनियों में रक्त के थक्के नहीं बनते, हृदय, मधुमेह और उच्च रक्तचाप में लाभ होता है.

■धूप, ताजी हवा, साफ-स्वच्छ पानी और सादा-सात्विक भोजन स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है.

■ नित्य योगासन-प्राणायाम करने से रोग नहीं होते और दीर्घायु की प्राप्ति होती है.

■ स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है. इसलिए शारीर को स्वस्थ रखें. सदाचारी, निरोगी व्यक्ति सदा सुखी रहता है.

■ स्नान करते समय पहले सिर पर जल डालना चाहिए, उसके बाद अन्य अंगो पर, जल न तो अतिशीतल हो न बहुत गर्म, स्नान के बाद किसी मोटे तौलिये से अच्छी तरह रगड़कर शरीर को पोछना चाहिए.

■ स्वाद के लिए नहीं, स्वस्थ रहने के लिए भोजन करना चाहिए.

■ भोजन न करने से तथा अधिक भोजन करने से पाचक अग्नि दीप्त नहीं होती. भोजन के आयोग, हीनयोग, मिथ्यायोग और अतियोग से भी पाचन शक्ति दीप्त नहीं होती है.

■ पानी या दूध तेजी से न पीयें, इन्हें धीरे-धीरे घूंट-घूंट कर पीयें.

■ भोजन के बाद दांतो को अच्छी तरह साफ करें, अन्यथा अन्नकणों के लगे रहने से उनमें सड़न पैदा होगी.

■ हल्का और जल्दी पचने वाला ही भोजन करना चाहिए. सड़ी-गली या बासी चीजें खाने से रोग होता है. अत्यधिक गर्म खाना खाने से दांत तथा पाचन शक्ति दोनों की हानि होती है. जरूरत से अधिक खाने से अजीर्ण होता है और यही अनेक रोगों की जड़ है.

■भोजन के बाद दिन में थोड़ा विश्राम और रात में टहलना अच्छा रहता है.

■ हमेशा शांत और प्रसन्न रहें. कम बोलने की आदत डालें, जितना जरूरी हो, उतना ही बोले.

■ चिंता से हानि होती है, लेकिन तत्व के चिंतन-मनन से बुद्धि का विकास होता है.

■प्रतिदिन आंखों में अंजन लगाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है.

■रात में 10 ग्राम त्रिफला को 200ग्राम ठंडे पानी में भिगों दे, सुबह छान कर उससे आंखे धोएं और बचे हुए जल को पी जाएं.

■ हफ्ते-दस दिन में कानों में एक बार तेल की बूंदे डालें. इससे कान की मैल निकल जाती है.

■ सोने के स्थान को साफ-सुधरा रखें. नींद आने पर ही सोना चाहिए. बिस्तर पर पड़े-पड़े नींद की राह देखना रोग को आमंत्रित करना है. दिन में सोने की आदत न डालें.

■ मच्छरों को दूर करने के उपाय करें. वे रोगों को फैलाने में सहायक होते हैं.

■ अगरबत्ती, कपूर अथवा चंदन का धुंआ घर में प्रतिदिन करें, इससे घर का वातावरण पवित्र होता है.

■ सांस सदा नाक से और सहज ढंग से लें. मुंह से सांस न लें. इससे आयु कम होती है.

■ उत्तम तथा सकारात्मक विचारों से मानसिक सुख तथा स्वास्थ्य अच्छा रहता है.

■ अच्छा साहित्य पढ़े अश्लील एवं उत्तेजक साहित्य पढ़ने से बुद्धि भ्रष्ट होती है, दूसरों के गुणों को अपनाएं.

■सुबह उठते ही एक-दो गिलास ठंडा पानी पीना चाहिए. यदि पानी तांबे के पात्र में रखा हो तो अधिक लाभप्रद है.

■ धूप का सेवन अवश्य करना चाहिए, इससे शरीर को विटामिन डी की प्राप्ति होती है.

■ मैदे की बनी हुई और तली हुई चीजों से परहेज करना चाहिए.

■ हर समय माथा ठंडा तथा पेट गरम रखना चाहिए.

■सप्ताह में एक दिन केवल नींबू पानी पीकर उपवास करना चाहिए, इससे पाचनशक्ति सशक्त होती है और स्वास्थ्य भी ठीक रहता है. यदि पूरा उपवास न कर सकें तो फल खाकर या फल का रस पीकर उपवास करें.

समीक्षा

बाबरा मन का फरेब.....

डॉ० ज़ेबा रशीद लेखन की दुनिया में वो नाम है जो किसी परिचय का मुहताज नहीं है. आपका एक उपन्यास 'क्योंकि औरत ने प्यार किया' मैंने पूर्व में पढ़ी थी और उस पर अपनी समीक्षा भी लिखी थी. उस उपन्यास की मेरे पास तीन प्रतियां थी जो मैंने संस्थान के आयोजन साहित्य मेला की पुस्तक प्रदर्शनी में रखवाई थी और तीनों ही पुस्तकें निकल गई. लोगों ने और मांग की थी लेकिन उपलब्ध नहीं थी. अभी कुछ माह पूर्व आपका दूसरा उपन्यास 'बाबरा मन का फरेब....' मुझे बहन डॉ० ज़ेबा की कृपा से प्राप्त हुई. मैंने तीन बार पढ़ी, पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ कि आज भी अच्छे लेखक है जिनको लोग पसंद करेगे और अवश्य ही पढ़ना चाहे. हम लोग कहते है कि पाठक कम हो गये है लेकिन सत्य यह है कि पाठक आज भी है बशर्ते पढ़ने लायक कुछ लिखा जाए. अगर अच्छा लिखा जाएगा तो पाठक उसे अवश्य खरीदेगे और पढ़ेगे भी.

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका बहन डॉ० जेबा रसीद जी, जजो स्वयं एक भावुकतता, करुणा, नम्रता एवं कोमलता को धारण की हुई नारी है. वे अपने उपन्यास के माध्यम से नारी के शारीरिक, मानसिक स्तर पर किए गये शोषण को बेबाक तरीके से प्रस्तुत की है. अपने व्यवसायिक लाभ के लिए पतिव्रता पत्नी को पार्टियों के बहाने नुमाईश लगाकर शोषण को किया जानना, विवाहेत्तर सम्बंधो को लेकर काफी कुछ लिखती है. आज हर सामाजिक व्यक्ति परिवार नामक सामाजिक संस्था को लेकर चिंतित है, परिवार टूटते व विखरते जा रहे है. परम्परा रही है परिवार नामक संस्था, इन सभी सवालों के जबाब लेखिका ने काफी गहनता से जांच पड़ताल करती नजर आती है.

नारी समाज की धूरी है, वह समाज को बांधे रखती है. वह सारे अभाव, कष्ट, प्रताड़ना झेलते हुए अपने आंसुओं से समाज के लिए गौरव प्रदान करती है. लेखिका ने स्त्री मन की भाव व्हिवल भगिगाओं को उद्वेलित करती हुई सहेलियों के माध्यम से अपने नारीत्व की रक्षा का बहुत ही सरल एवं सहज तरीके से बचाव करती है.

लेखिका को इस सुन्दर सामाजिक उपन्यास लिखने की बधाई. आशा में भविष्य में आपकी लेखनी और भी पढ़नीय उपन्यास प्रदान करेगी.

लेखकः डॉ० ज़ेबा रशीद
मूल्यः २५०/रुपये
प्रकाशकः मिनर्वा पब्लिकेशन

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1-प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
2. बिक्री की व्यवस्था
3-प्रचार-प्रसार की व्यवस्था
4-विमोचन की व्यवस्था
5- ऑन लाईन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011ई—मेलः
sahityaseva@rediffmail.com

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1&20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः** पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान, बचपना सम्मान

2&20 ls 40 **वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री

3–40 **वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि

4-**सभी आयु वर्ग के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री**

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथिः 15 fnlEcj 2020

laid dk;kZy;%
सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
अनिल चक्की के सामने, लक्सों कंपनी के पहले, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड,
मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com,
hindiseva15@gmail.com, 9335155949

कोरोना लाक डाउन में अपने पड़ोसियों का ध्यान अवश्य रखें. अगर कोई हमारा पड़ोसी भूखे सोया तो हमारा मानव धर्म हमें धिक्कारेगा।

&विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जनहित में जारी

तृतीय लघु कथा प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5000/रुपये मात्र

देश-विदेश का कोई भी लेखक इसमें प्रतिभाग कर सकता है. इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. आपको अपनी एक लघु कथा पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि लघु कथा 300 (तीन सौं) शब्दों से अधिक की न हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए चयनित प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए एक रचनाकार का चयन किया जाएगा. जिसे इलाहाबाद में आयोजित होने वाले साहित्य मेला में पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र स्वयं उपस्थित होकर ग्रहण करना होगा। विजेता को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkb,u 0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०ः
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।